वर्ष-25 आषाढ़ - श्रावण जुलाई 2020 अंक-7

आर.एन.आई.नं. 0048570/29/30/982

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं. एस.डी.08/2018-2020

मूल्य 10/- रुपये

मासिक

आगमोद्धारक

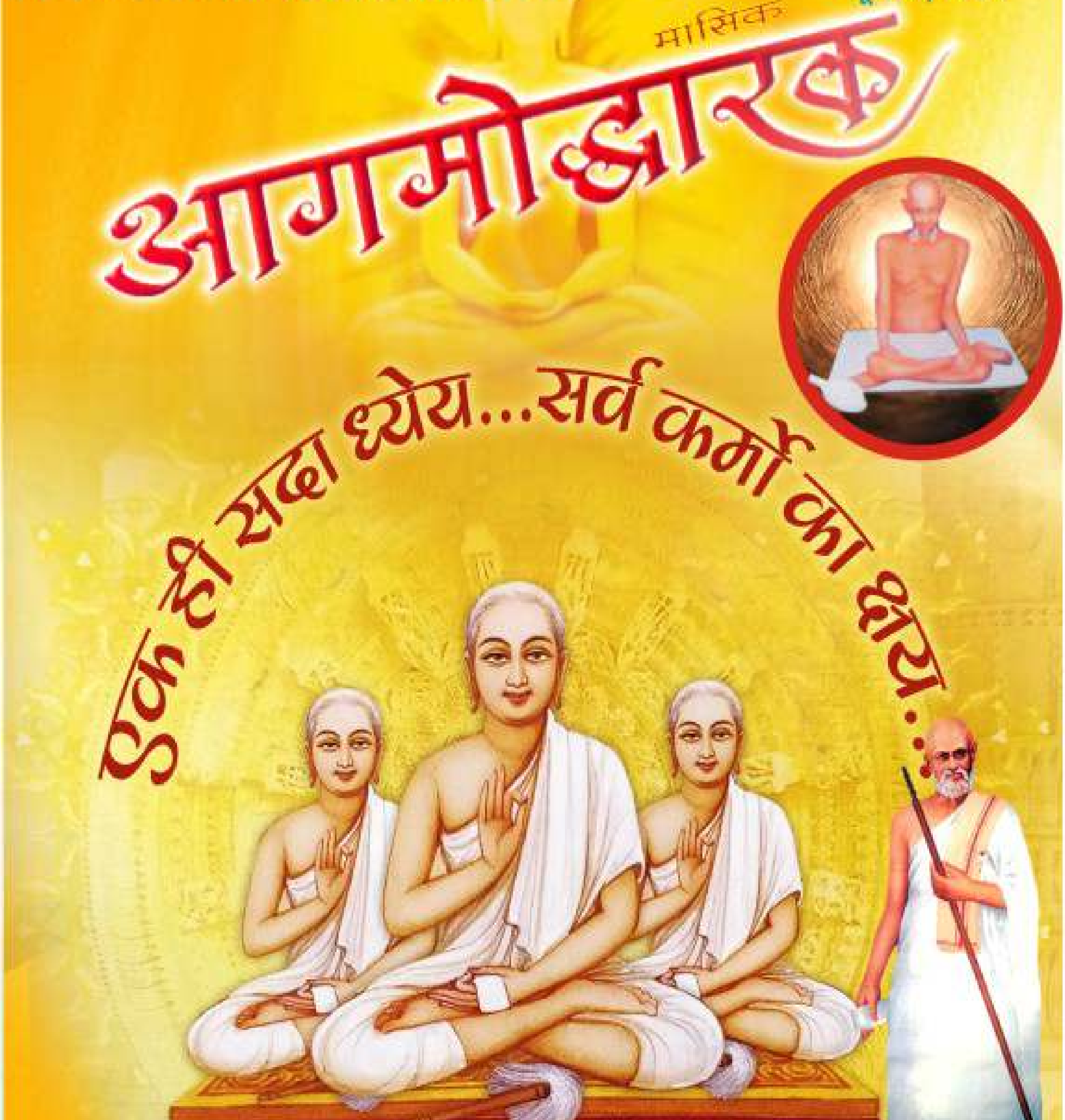

चातुर्मास एवं आगमोध्दारकश्री विशेषांक

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फ ाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897
1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in
2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

''स्यात्पद''से यह बात भी मान्य है कि जो होनेवाला है वह बदलनेवाला नहीं और जो बदलनेवाला है वह होनेवाला नहीं। तो फिर धर्म के प्रयत्न में, आत्महित में अन्य उपधि के अधीन होकर प्रमाद क्यों धारण करें ?

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

प.पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

सव्वं जगं जइ तुहं, सव्वं वा वि धणं भवे।
सव्वं पि ते अपज्जत्तं, नेव ताणाय तं तवे॥

यदि सारा जगत और यह सारा धन भी तुम्हारा हो जाय, तो भी वे सब अपर्याप्त ही होंगे और न ये सब तुम्हारा रक्षण करने में ही समर्थ होंगे। **- उत्तरा. सूत्र, 14.39**

पाथेय

सकल धरा पर शान्ति हो, शान्ति हो, सब लोगों को साधारण चेतना से छुटकारा मिले और सभी भौतिक पदार्थो की आसक्ति से मुक्त हो। तुम्हारी दिव्य उपस्थिति का ज्ञान सब में जागृत हो। वे तुम्हारी सर्वोच्च चेतना से स्वयं को संयुक्त करें, और इस असीम शान्ति का कर सकें रसास्वादन जो तुम्हारी सत्ता से होती है प्रवाहित। हे नाथ, तुम हमारे अस्तित्व के एकमेव स्वामी हो, तुम्हारा नियम ही हमारा नियम बनें। और हम पूरी सामर्थ्य के साथ यह अभीप्सा करते हैं कि हमारी चेतना, तुम्हारी दिव्य चेतना से हो जाए संयुक्त जिससे हम तुम्हारा महान कार्य कर सकें सम्पन्न, प्रत्येक पदार्थ में प्रत्येक क्षण।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-25 आषाढ़-श्रावण जुलाई 2020 अंक-7

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3

2- विषय सूची 4

3- चार्तुमास : आध्यात्मिक समृद्धि का आधार (सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन 5

4- जैनत्व की पहचान का पर्व ''चार्तुमास'' - सुरेशचन्द्र बारौलिया 6

5- संवत्सर याने वर्षीतप और अक्षय तृतीय कुछ अद्‌भूत अनुभव 7-10
-डॉ. सुभाष जैन, चार्तुमास....

6- मैं मनोरमा-श्रीमद् विजयमुक्ति/ मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म. 11-12

7- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्री अरुणविजयजी म.सा., 13-14
चार्तुमास की महत्ता : चौमासे के शुभारंभ फल

8- चार्तुमास में बदलेगा जीवन 15

9- चार्तुमास यानि साधना से सफलता.... 16

10-ऐसा भी करें:- बच्चों का चार्तुमास 17

11-बिटिया रानी...!, पू.आ.श्री जितरत्नसागरसूरीजी ''राजहंस'' 18

12-चक्रवर्ती की राजधानी-मुनिश्री जितरत्नसागरजी ''राजहंस'' 19

13-जीने की कला सिखाता है धर्म-सुनील जैन 20

14-हमारी अनमोल धरोहर : आगम ग्रंथ 21

15-आगमों के संरक्षक-पूज्यपाद श्री आनन्दसागरसूरीजी महाराजा 22-23
करोड़ों की कीमत का हीरा

16-45 आगम के नाम, एक अद्‌भूत छःरिपालित संघ 24

17-सागरजी महाराज अर्थात् जंगम पुस्तकालय, मगनभाई का दीक्षा प्रेम 25

18-श्रमण संस्कृति के दिव्यपुंज परम पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री 26

19-प्लास्टिक : प्रदूषण-मुक्त भारत का संकल्प, ललित गर्ग, 27-28

20-आगमोद्धारक भविष्य फल-जुलाई-2020-अनु दीपक जैन,स्वप्न में गोदर्शन का फल 29

21-वर्गपहेली- 303 - जयंतीलाल जैन 30

22-ज्ञान गंगोत्री- 303- पंन्यास प्रवर मृदुरत्नसागरजी म., 31

23-शासन-समाचार 32-41

24- हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि 42
नियुक्त करना है

संपादकीय

चार्तुमास : आध्यात्मिक समृद्धि का आधार

चतुर्विध *संघ का निर्माण परमाात्माश्री महावीरस्वामीजी की दीर्घ दृष्टि का परिणाम है । इसमें दो मुख्य पाये साधु और साध्वीजी है जो जैनत्व के लिये धर्म आराधना का आधार है । अगर यह कहा गया है कि ''**तीर्थकर समो सूरी**'' तो यह कोई अतिशयोक्ति पूर्ण बात नहीं है जो साधु-साध्वी भगवंतों के संपर्क में आता है वही इनकी महिमा जान सकता है। साक्षात परमात्मा के दर्शन श्रमण समुदाय के वेश में होते है। आलोचना करनेवाले घोर निंदा के पात्र है। जिन श्री संघों में चार्तुमास होते हैं और जब वहां साधु-साध्वी का आगमन होता है तो पूज्यश्री का मुस्कराता भावपूर्ण चेहरा, सरल स्वभाव, कोमल हृदय, निष्कष्ट व्यवहार, उच्च विचार, सिद्धांत मर्मज्ञता, चंद्र समशीलता सूर्यसम तेज, पूज्यता और पृथ्वीसम क्षमाशीलता, अनुकम्पाशील विशाल हृदय आदि गुणों की सौरभ में श्री संघ सुरभित बन जाता है। गुरु भगवंतों के गुणों के बारे में लिखना सीप में महासागर को समेटने जैसा है । श्रमण भगवंतों का समग्र जीवन परोपकार, जीवोद्धार, जीर्णोद्धार, समाजोद्धार, व्यक्तिद्धार, सद्विचार और सौम्यता तथा आध्यात्मिकता की धरोहर के रुप में श्री संघ का प्राप्त हुआ है।*

*चार्तुमास के चार माह में आपश्री के साधनामय जीवन को देखना और उनके मुखारबिंद से भव्य जीवों को संबोदनार्थ जिनवाणी निःसृप्त होती है तो उस अद्भूत प्रभावशाली वाणी से हजारों-हजार धर्मिष्ठों के हृदय के क्षणमात्र में परिवर्तित करती हुई जीवन पथ के लिये एक नई दिशा बोध प्रदान कर देती है। यही नहीं विद्वता से भरे विश्लेषण और सुगम शब्दों में झरती जिनवाणी धर्मिष्ठों पर अमिट छाप छोड़ती है । मैंने अनेक बार गुरु भगवंतों की जिनवाणी के प्रभाव, पुण्य और पवित्रता से प्रभावित होकर आंखों में अश्रुधारा बहाते धर्मिष्ठों को देखा यही नहीं उनके जीवन में जो परिवर्तन आये वे भी स्मरणीय है, सदाचार के पावन संस्कार प्रदान कर गुरु भगवंतों ने श्री वीरप्रभु की पाट परम्परा को उज्ज्वलित किया है। आपके पद विहार की यात्रा एक बार पुनः चातुमार्सिक आराधना के चार माह के लिये स्थिर हो रही है, आप सबसे निवेदन है कि इस समय पर भरपूर उपयोग अपने जीवन के उत्थान के लिये उपयोग करें,हमने पिछले महिनों में कोरोना महामारी से प्रभावित हुए लोगों को देखा ही है, धन सम्पत्ति प्रभाव नाते रिश्तेदार कुछ भी काम नहीं आया, संवेदनाओं के मध्य मानवीय असंवेदनाओं के अनुभव भी देखने सुनने में आये मानव प्रकृति के समक्ष और आधि, उपाधि से त्रस्त होकर कितना असहाय हो जाता है । यह कोरोना ने दिखा दिया है । इस सबके बीच परमात्मा से दूरी हो जाने के बाद भी धर्म आराधना का आधार ही जीवन पथ पर आगे बढ़ने में काम आया यह अनुभव भी अनेक लोगों से मिलने-सुनने में आये है। ''**आई एम समथिंग**'' का भाव रखनेवाले अहंकार से चुर मानव को यह अहसास हो गया है कि- ''**यू आर नथिंग**'' प्रकृति के समक्ष किसी भी मानव की धन, दौलत, प्रभाव वाले या अन्य किसी की भी कोई वेल्यु नहीं है, वेल्यू है तो सिर्फ सद्व्यवहार, मानवीयता, धर्मआराधना पूर्ण जीवन जीने की ओर हमेशा अपने को कुछ नहीं समझने की है, इस अहसास के साथ जीने की सबक देने का कालखण्ड चार्तुमास हमारे बहुत निकट है, अपने पुण्यों को जागृत करने का गोल्डन चाँस हमारे सामने है, दृढ़ संकल्प शक्ति और जान है तो जहान है के भाव को सामने रखकर अपने कर्म क्षेत्र में पुनः सक्रिय हो जाए फिर देखिये लोग आप से सम्पर्क कर, देखकर, व्यवहार कर आश्चर्यचकित हो जायेंगे कि इस व्यक्ति में कितना बदलाऊ आ गया है । शायद जीवन जीने का यही सर्वश्रेष्ठ मार्ग भी है।*

जैन कहलाने में हम अपने को गौरावित समझते है यही नहीं अनेक अजैन लोग आपके संपर्क में आकर आपके जैन होने का पता चलने पर आपके प्रति सम्मान की दृष्टि से देखते भी है। पर आज जैन के नाम पर क्या हो रहा है और लोगों के नजरिये में आपके प्रति क्या सोच बन रही है इस बात को गंभीरता से विचारिये । ***जैन बनो उससे पहले अच्छे मैन बनने का प्रयास करें ।*** *जैसे पानी छानकर पीते है, वैस ही वाणी को भी छानो। संसारी जीवन में रहकर हम संतत्व का जीवन जी सकते है, हमारा जीवन सहज और सरल बनेगा तो आत्मा में धर्म की प्यास का जागरण हो जायेगा। जीवन को टालने का यही वक्त है बाद में तो समय चूक जायेगा। जीवन के तीन पड़ाव है, बचपन, जवानी और बुढ़ापा। इस धरती पर भी तीन महापुरुषों का अवतरण हुआ था जिनकी जीवन गाथा ने संसार में भारी बदलाव ला दिये । भगवान श्रीराम, नारायण श्रीकृष्ण और चरम तीर्थकर परमात्मा भगवान श्री महावीरस्वामीजी। मनुष्य का बचपन, श्री कृष्ण की तरह नटखट होना चाहिये तो जवानी भगवान श्री राम के समान मर्यादित होना चाहिये और बुढ़ापा अध्यात्म से ओतप्रोत भगवान श्री वीर प्रभु जैसा होगा तो जीवन में बदला आना निश्चित है। अपने कर्म के छेदन के लिये यह चार्तुमास हमारे जीवन की आध्यात्मिक समृद्धि का आधार बने यह भाव के साथ चिंता नहीं चिंतन के साथ जीवन जीए । यही शुभ भाव !*

✻ डॉ. सुभाष जैन

जैनत्व की पहचान का पर्व ''चार्तुमास''

✻ सुरेश चन्द्र बारौलिया

भारत के सांस्कृतिक इतिहास में चार्तुमास की प्रशस्त परम्परा रही है। विभिन्न धार्मिक स्थानों में वर्षायोग या चार्तुमास साधना के कारण अति महत्व का माना गया है। साधु-मुनि को वर्षायोग के शुरु होने के साथ ही साधना के विभिन्न प्रयोग करने का अवसर मिलता है। एक साथ चार माह तक एक ही स्थान-क्षेत्र पर विराजमान हो जाते हैं। इसी स्थिरता को चार्तुमास योग कहा जाता हैं। यह परम्परा दीर्घकालीन है और वर्तमान में भी इसका पालन होता है। चार्तुमास से जुड़े हुए अनेकों बिन्दु है। संतों की साधना का सर्वाधिक महत्व है और श्रावकों के लिये भी प्रतिक्रमण का विधान है। जिस श्रावक को आत्मा की उन्नति की लगन लग जाती है उस साधक के लिये यह पर्व अत्यधिक महत्व पूर्ण हैं। वर्षायोग और मानवीकरण का जागरण करता है। क्षमा की भावना पैदा करता है। साधु-संत अपने विहार में जीवों की रक्षा में कठिनाई न आये इसलिये आगे देखकर शुद्धिपूर्वक गमन करते हैं। साधु सन्त वर्षाकाल में नवीन-नवीन जीवों की उत्पत्ति एवं हरित्काय वनस्पति की बहुलता देखकर एक निश्चित क्षेत्र सीमा निश्चित कर चार्तुमास की करते है। जो 120 दिन तक रहता है। धर्मानुरागी संतों एवं गुरुओं के दर्शन-लाभ के लिए मीलों कष्टसाहय यात्राएं करते है उनके लिये चार माह तक गुरु का सान्निध्य सहज प्राप्त हो जाता है। जिस श्रीसंघ में समागम के पुण्य उदय है। जिस श्रीसंघ के क्षेत्र में पुण्य परमाणु बिखरे हुए हैं। वे चार्तुमास का सुयोग प्राप्त कर सकेंगे तथा चार माह तक अपने जीवन रक्षण की भावना को जाग्रत करते है। साधु-संत जन-जन के कल्याण हेतु धर्म जाग्रति एवं ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना के लिये जैन श्रावक-श्राविकाओं को जिनवाणी रुप धर्म संदेश देने के लिये तथा जीव हिंसा से बचने के लिए एक ही स्थान पर धर्म की आराधना करते हैं। यह एक पवित्र पर्व है। आत्मा के कल्याण हेतु पवित्रता अति आवश्यक है। केवल साधना करनेवाला ही पवित्रता का ध्यान नहीं रखता है। श्रावक को भी पवित्रता बनाये रखना हैं। संसारिक कार्यो में भी फंस कर व्यक्ति यदि धर्म का ध्यान रखे तो उसे पवित्रता की ओर बढ़ता हुआ कदम समझना चाहिये।

भारत की वसुंधरा पर जैन संस्कृति के विकास का प्रतिफल ही चार्तुमास हैं। संतों के चार्तुमास के कारण अनेकों क्षेत्रों में विकास हुआ है। श्रुत ज्ञान के संरक्षण, मंदिरों एवं उपाश्रय के निर्माण, शास्त्र लेखन तथा श्रुत भंडारों की व्याख्या तथा उतंग भवन जिनालयों के निर्माण हमारी महान परम्परा और आचार्य श्रवण भगवंत औरश्रीसंध के हजारों श्रावक श्राविका चार्तुमास के मूर्तिमान प्रतीक हैं। जहां भी संतों का चार्तुमास होता है वह भूमि तीर्थ बन जाता है। चारों ओर विकास की संभावनाएं स्वर्णिम हो जाती है।

जैन शास्त्रों में चार्तुमास के विषय में लिखा है कि श्रमण के वर्षायोग का समय कषाय रुपी अग्नि को एवं मिथ्यात्व रुपी ताप को त्याग एवं वैराग्य की शीतल धारा से स्वाध्याय और ध्यान की जनवृष्टि से शांति करने का होता है। जिस प्रकार जल की शीतल धारा वरस कर धरती की तपन को शांत करती है। यह आध्यात्मिक जागृति का महापर्व है। जिसमें स्व-पर हित साधना का अच्छा अवसर होता है। यही कारण है कि चार्तुमास को मुनिचर्या का आवश्यक अंग और महत्वपूर्ण योग माना गया है। इस चार्तुमास के अवसर आत्म शुद्धि के लिये क्रोध, मान, माया तथा लोभ रुपी कषायों को हटाकर सम्यक श्रद्धा ज्ञान और आचरण को पूर्ण उतारा जाता है। सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह के द्वारा अपनी शुद्धि की जाती है। वाणी में स्याद्वाद विचारों में अनेकान्तवाद और आचार में अनेकान्त की प्रतिष्ठापना की जाती है।

सुकरात को जहर पिलाकर मारने की आज्ञा दे दी गई। किन्तु न्यायाधीश को उस पर दया आ गई और कहा-सुकरात ! यदि तू सत्य की बात कहना बंद कर दे तो तुझे क्षमादान दिया जा सकता है।

सुकरात ने कहा- ''फिर मैं जीकर करुंगा भी क्या। असत्य बोलूं, असत्य का समर्थन करुं असत्य के लिये जिऊँ इससे तो मुझे मौत की सजा ही अच्छी, इससे तो बेहतर मर जाना है। मैं रहूंगा तो सत्य ही बोलूंगा। मेरे रहते सत्य की सुगंध ही बिखरेगी।''

संवत्सर याने वर्षीतप और अक्षय तृतीय
कुछ अद्भूत अनुभव

✱ डॉ. सुभाष जैन

जैन संस्कृति की अनमोल एवं विशिष्ट पहचान मुख्य रुप से हमारे साधु-साध्वी, गुरु भगवंतों के कारण है। हमें अपने जीवन पथ पर आगे बढ़ाने में गुरु भगवंतों के जीवन आदर्श और उनके उपदेश सदैव प्रेरणा के रुप में उपयोगी रहे है, कहते है जिसके जीवन में गुरु नहीं उसका जीवन शुरु ही नहीं होता है। देखा जाए तो गुरु हमारे लिये सिर की पगड़ी नहीं शरीर की चमड़ी है जो मरने तक हमारे साथ रहती है, ऐसा ही गुरु के लिये भी है। जब भी हम संकट अथवा भ्रम के भंवर में फंसते है अथवा जीवन के उत्थान की बात आती है तो गुरु भगवंतों के अमृत वचन जीवन को सही प्रकार से जीने की राह दिखाते है। साधु-साध्वी भगवंत का सानिध्य एवं सत्संग सौभाग्य से मिलता है यह हमारे लिये जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति होती है। मुझे भी यह अनमोल सौभाग्य मिला है। **मालव भूषण आचार्य भगवंत पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा एवं आपश्री के संपूर्ण गुरुकुल ने मेरे जीवन की धारा ही बदल दी है।** आज गुरुदेव का नहीं होना मेरे जीवन की सबसे बड़ी क्षति है, इससे बड़ा नुकसान मेरे जीवन में हो नहीं सकता है। गुरुदेव तो आज भी साक्षात है, वे आज भी है सिर्फ गुरुदेव का लोकांतरण हुआ है।

पूज्य गुरुदेव एवं सागर समुदाय के सभी पूज्य साधु-साध्वी भगवंतों का मुझ पर आर्शीवाद और कृपादृष्टि आज भी बनी हुई पूज्यश्री के संपर्क में आने के लगभग 45 वर्षो में अनेक जिनशासन संबंधी कार्यो की प्रभावना का लाभ भी मिला, यही नहीं गुरुदेव की निकटता ने अनेक मंगल तपाराधना का भी संयोग जीवन में बना। वर्ष 2019 में विचार किया मुझे नवपद वर्धमान तप की 31 वीं ओली आरंभ करनी है सोचा यह तो एक माह में पूर्ण हो जायेगी फिर छुटे हो जायेंगे, कुछ नया क्यों नहीं करुं। बस मन तैयार हो गया, गुरुदेव का आर्शीवाद लिया और दादा श्री आदिनाथ प्रभु के दर्शन वंदन का संयोग बना। दिन भी अतिमंगलकारी चैत्र वदी-8, गुरुवार दिनांक 28 मार्च 2019 वर्षीतप धारने का शुभ दिवस। दादा का जन्म और दीक्षा कल्याणक का प्रभावी दिवस।

तलेटी पर चैत्र वंदन कर 16वें तीर्थंकर परमात्मा दादा श्रीशांतिनाथ प्रभु के जिनालय पहुंचा तो देखा चैन्नई के अनेक लोग थे, भाई पारसजी से भेंट हुई बोले- सुभाषजी आये हो आज चैन्नई श्री संघ की ओर से 18 अभिषेक है, आप भी लाभ लेना मेरी परम सौभाग्य जागृत हुआ। मैं बोला- मैं दादा के दरबार में पहुंच रहा हूं, वे बोले- ठीक मैं आता हूं, दादा का अभिषेक करना। मैं पूजावस्त्र धारण कर दादा के दरबार में पहुंचा, अविरल आंसु धारा के मध्य वर्षीतप ग्रहण करने का संकल्प लिया। आचार्य भगवंत आगे दादा की आराधना में मग्न थे, मैंने पूज्यश्री से उपवास के पच्चखाण ग्रहण किये, आचार्यश्री बोले- उपवास ? वर्षीतप करेंगे ? मैंने सहमति दी। पूज्यश्री ने मंगल आर्शीवाद के साथ पच्चखाण दिये, बोले- जाऊं हो गया वर्षीतप।

वर्षी तपाराधना चैत्र वदी-8 दिनांक 28 मार्च 2019 से पारणा दिवस 26 अप्रेल 2020 तक कुल 396 दिवस में 14 बेले 203 उपवास और 193 बियासणे आये थे। संपूर्ण वर्षीतपाराधना मैं यह प्रत्यक्षता अनुभव किया कि गुरुदेव और अन्य शक्तियों का सहयोग मेरे साथ है। कोई आदि-व्याधि और उपाधि ने हैरान नहीं किया और जो कुछ रही सही परेशानी थी वह भी वह भी दूर हो गई है।

यह अनुभव भी पक्का रहा कि- कर्म निर्जरा में तप के समान कोई आराधना नही, मन-मस्तिष्क, भाव-स्वभाव, व्यवहार सबमें अपने आप परिवर्तन आने लगता है, कहा भी है जो तपता नहीं वह पकता नहीं, सोना भी तपने के बाद निखरता है रोटी भी पकने के बाद स्वादिष्ट होती है। जैन दर्शन में स्पष्ट उल्लेख है कि आत्मा को शुद्धात्मा बनाने के लिये उसे तपस्या और साधना की भट्टी में छौंकना होगा। वर्षी तपाराधना में अनेक बार अनुभव में आया जो सोचा वह पूर्ण हुआ, श्री भोपावर महातीर्थ में पंचकल्याणक में प्रियवंदादासी के पात्र के लिये लाभ लेने की भावना पूज्यपाद गुरुदेवश्री के समय से ही थी गुरुदेव को जब अवगत कराया तो आपश्री ने कहाकि- इंतजार करो, योग्य समय पर सब होगा। जब समय आया तो गुरुदेव चले गये। अन्य सब गुरु भगवंत को अवगत कराया तो ज्ञात हुआ कि- प्रियदंरादासी का लाभ अन्य को दिया है।

घोर निराशा हुई, सबको कहने के बाद भी लाभ नहीं मिला। सोचा प्रभु की जो इच्छा। बाद में चर्चा चली तो बात भगवान के माता-पिता के लिये लाभ लेने की बात सामने आई, बहुत अधिक नकरा देने की स्थिति भी नहीं थी। एक दिन युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर महाराज की ओर से फोन आया सुभाषजी सुबह 12.30 तक आप भोपावर पहुंचो। मैंने उज्जैन से दूसरे दिन सुबह भोपावर के लिये प्रस्थान किया, ठीक 12.20-25 पर मैंने दादा के दरबार में प्रवेश किया मैंने दादा के जिनालय की मुख कर नमो जिणांण किया, देखा -आचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी विराजमान थे, गुरु वंदना कर मैं बोला- साहेबजी सही समय पर पहुंच गया। आचार्यश्री ने कहा- भगवान के माता-''पिता बनने भावना रखो'' इसी बीच श्रेष्ठीवर्य श्री रमणभाई (मोंटेक्स) आ गये, उनसे प्रणाम हुआ, चर्चा शुरु हुई, मैंने मना किया तो रमणभाई बोले-आपको माता-पिता बनना है, बस फाईनल और मुझे तिलक कर दिया, मैंने नकरे की चर्चा की तो आपने बोला- यह सब हम बाद में देखेंगे, अगर आप एक रुपया भी दोगे तो वह एक करोड़ रुपये के बराबर होगा। मैं आश्चर्यचकित हो गया। 10 मिनिट में लाभ दे दिया **यह पूज्यपाद गुरुदेवश्री के आर्शीवाद का ही परिणाम था, यह लाभ मैंने लिया नहीं, गुरुदेव ने ही मुझे दिया।** आचार्यश्री विश्वरत्न सागरसूरीजी का भाव, रमणभाई की अपार कर्तज्ञता और स्नेह से भाव विभोर हो मैंने दादा के दर्शन वंदन कर उज्जैन के लिये प्रस्थान किया। अनेक छोटे-बड़े और अनुभव है जो वर्षीतप आराधना में प्रत्यक्षता देखे अनुभव किये और जो सोचा उसे पूरा होते देखा इन्हें शब्दों में बंधना संभव नहीं है।

चालु वर्षीतप आरंभ-
चैत्र वदी -8
दिनांक-16/03/2020
पारणा
अक्षय तृतीया
दिनांक-15/05/2021

पारणा का दिन निकट आता जा रहा था। इसी बीच प्रधानमंत्री ने कोरोना महामारी के कारण 22 मार्च 2020 से सम्पूर्ण देश में लॉकडाउन कर दिया, सब योजना धरी की धरी रह गई। कहीं आना-जाना, मंदिर सब बंद, वर्षीतप के लिये पंच दिवसीय महोत्सव के आयोजन पर भी ब्रेक लग गया, पारणा के लिये श्री सिद्धाचल जाने के भाव को भी ठेस पहुंची, पारणा घर में ही करना होगा। मै विगत 7 मई 2007 से श्री औलोकिक पार्श्वनाथ दादा आसामपुरा के दरबार में पूनम करने जा रहा हूं, दादा की अनहत् कृपा से मई 2007 से अभी 5 जून 2020 तक की पूनम में न कोई रुकावट अड़चन आई है और नहीं कोई पूनम छुटी है , लॉकडाउन में कैसे जाना होगा ? पर प्रभु की कृपा से मैं अप्रेल, मई माह जबर्दस्त कर्फ्यू के वातावरण में भी मेरी पूनम की यात्रा में कोई परेशानी नही हुई , कुछ रुकावट आई, पुलिस ने रोका भी, पर प्रभु की कृपा बड़ी थी। चैत्री पूनम पर भी अलौकिक पार्श्वनाथ प्रभु के दरबार में निर्मित श्री सिद्धाचल गिरिराज की रचना पर चैत्री पूनम की सब आराधना की, तलेटी की वासक्षेप पूजा, अभिषेक और पूजन कर चैत्री पूनम की आराधना का आनंद लिया।

अब पारणा की तिथि अक्षया तृतीय समीप आ गई थी। 26 अप्रेल 2020 रविवार पारणा का दिन था, कोरोना से सब लॉकडाउन बंद, पुलिस का सख्त पहरा, कैसे क्या होगा ? ईक्क्षु (गन्ना) कहां से मिलेगा ? प्रभु का पक्षाल होगा कि नहीं?अनेक दुविधा मन में थी, पर पूर्ण विश्वास भी था कि सब अच्छा ही होगा। परिवारवाले घर पर ही पारणा करने की बात कह रहे थे। मैंने आसामपुरा तीर्थ जहां श्री शत्रुंजय महातीर्थ की रचना बनी होने के साथ दादा श्री आदिनाथ प्रभु का मूलनायक रुप जिनालय भी है, वहां जाने का मन बना लिया था, परिचित के माध्यम से गन्ने की व्यवस्था भी हो गई, रस निकालनेवाला योग से घर के सामने ही था। प्रातः जैसे-तैसे रास्ता बनाकर श्री अलौकिक पार्श्वनाथ तीर्थ जाने के लिये प्रस्थान किया। पुलिस ने व्यवधान डाले पर दादा की कृपा से महातीर्थ पहुंच ही गया। दादा का इक्क्षु रस से पक्षाल किया, तलेटी पर वासक्षेप पक्षाल पूजा की, पांच चैत्यवंदन किये, अन्य सब क्रिया पूर्ण कर घर के लिये प्रस्थान किया, पुलिस ने फिर रोका अनुनय, विनय कर घर पहुंच ही गया। यहां परिवारवालों के साथ बहुत शांति से पारणा किया, एक आश्चर्य तब हुआ जब मेरे पौते वीरांश ने इक्क्षु रस मुझे पिलाया तो एक घुट गले में जाते ही ऐसा लगा जैसे मैनें अमृत पिया हो। जैसे मुझे वर्षीतप कुछ था ही नहीं, शरीर में दस गुना ताकत आ गई, मुझे खुद लगा कि यह कैसा अनुभव है ? खैर परमात्मा की अनहत कृपा और गुरुदेवश्री के असीम आर्शीवाद से 13 माह का तप ऐसा लगा कि कुछ क्षणों में पूर्ण हो गया।

वर्षीतप की एतिहासिक पृष्टभूमि

प्रथम युगादिदेव परमात्मा श्री ऋषभदेव प्रभु

(आदिनाथ) का जन्म क्रोड़ा-क्रोड़ी वर्ष पूर्व अवसर्पिणी काल यानी तीसरे आरे के समय में हुआ था। प्रभु की आयु 84 लाख वर्ष पूर्व, देह की ऊंचाई 500 धनुष थी, एवं वर्ण स्वर्णमयी था।

संसार के समय प्राणियों एवं मानव को रहन-''सहन के तरीके से लेकर आत्मोद्धार मोक्ष प्राप्ति तक'' सभी प्रकार का ज्ञान, जीवन जीने की कला, सही-गलत कार्य के द्वारा कर्मो का बंधन एवं उससे मुक्ति के उपाय भी प्रभु ने ही मार्गदर्शित किये थे।

वर्षीतप की विधि

1- उपवास+बियासणा
2- चौदस को वापरना नहीं
3- बियासणा साथ में नहीं करना
4- उपवास के दिन में देववंदन, प्रभुपूजा 12 साथिया-फल+नैवेध12 लोगस्स का कायोत्सर्ग
5-20 माला ''श्री ऋषभदेवनाथाय नमः''
6- सुबह-शाम प्रतिक्मण

वर्षीतप कथा

प्रभु ने अपने पूर्व जन्म में एक बैल कामुंह बांधने की सलाह दी थी क्योंकि यह बैल खेतों की फसल को खा रहा था, खेत के मालिक द्वारा बैल को निर्दयता से मारता देख,प्रभु ने करुणावश यह सलाह दे दी कि इससे बैल को मार भी न पड़ेगी और किसान को फसल का नुकसान भी नहीं होगा।

बैल 360 पलोपल तक तड़पता रहा, उसे वेदना हुई, प्रभु के करुणामय भाव होते हुए.... भी अंतरायकर्म का बंध हुआ, इसी कर्म के निवारणार्थ प्रभुजी को 400 दिन तक भिक्षा में आहार नहीं मिला.... उपवास से रहना पड़ा।

प्रथम युगादिदेव श्री आदिनाथ प्रभु के 400 उपवास निमित्ते शास्त्रों में यह भी लिखित है, उस समय में प्रजा अनभिज्ञ थी, कोई प्रभु को हाथी तो कोई सोना तो कोई क्या, अपनी इच्छा से भेंट कर रहा है। लेकिन प्रभु को तो पारने में काल्पिक आहार चाहिये था। जिसे हर कोई समझ नहीं पा रहा था। उस समय साधु भगवंतों को क्या और कैसे आहार देना चाहिये यह समझ नहीं थी। योग्य आहार न मिलने की वजह से प्रभु को इतने दिन उपवास में रहना पड़ा था।

वर्तमान अवसर्पिणी काल में

यहीं से तप के द्वारा कर्म बंधन से मुक्तिका विधान शुरु हुआ, कालान्तर में इसे वर्षीतप के नाम से जाना जाता है।

चैत्र वदि-8 को प्रभुजी ने संयम मार्ग पर महाप्रयाण किया था, अतः इसी दिन से वर्षीतप की शुरुआत की जाती है एवं प्रभु के पारणा दिवस वैशाख सुदी-3 को पारणा किया जाता है। कर्मों की निर्जरा के लिए यह वर्षीतप किया जाता है, आजकल उपवास के पारणे बियासणा एवं बड़े दिनों में बेले-तेले उपवास भी किये जाते है। पूर्व में अर्जित अंतराय कर्म की जंजीरों को तोड़नेवाला प्रबल सामर्थ्य इस तप-क्रिया में है।

अक्षय तृतीया पारणा दिन

अक्षय तृतीया जैन धार्मावलम्बियों का महान धार्मिक पर्व है। इस दिन जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान ने एक वर्ष की पूर्ण तपस्या करने के पश्चात इक्षु (शोरडी-गन्ने) रस से पारणा किया था। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान ने सत्य व अहिंसा का प्रचार करने एवं अपने कर्म बंधनों को तोड़ने के लिये संसार के भौतिक एवं परिवारिक सुखों का त्याग कर जैन वैराग्य अंगीकार कर लिया। सत्य और अहिंसा के प्रचार करते-करते आदिनाथ प्रभु हस्तिनापुर गजपुर पधारे जहां इनके पौत्र सोमयश का शासन था। प्रभु का आगमन सुनकर सम्पूर्ण नगर दर्शनार्थ उमड़ पड़ा। राजकुमार श्री श्रेयांसकुमार को अपने प्रपितामह श्रीआदिनाथ दादा के दर्शन पाते ही जाती-स्मरण ज्ञान हुआ जिससे आहार देने की विधि को जानकर इक्षु रस को ग्रहण करने के लिये भक्ति भाव पूर्वक प्रभु से आग्रह करने लगा। प्रभु ने काल्पिक आहार समझकर श्री श्रेयांसकुमार के हाथों पारना किया। देव दुंदुभिया बजने लगी। जनता में हर्ष का पार ना रहा। उसी दिन से यहां से वर्षीतप के पारने की प्रथा चालू हुई। कहा जाता है कि -भगवान के इक्षु रस से पारना होने के कारण उस दिन को पूरे शासन में अक्षय तृतीया के नाम से जाने लगा। जो आज तक प्रचलित है। जैन धर्मावलंबियों का मानना है कि गन्ने के रस को इक्षुरस भी कहते हैं इस कारण यह दिन इक्षु तृतीया एवं अक्षय तृतीया के नाम से विख्यात हो गया।

भगवान श्री आदिनाथ ने लगभग 400 दिवस की तपस्या के पश्चात पारणा किया था। यह लंबी तपस्या एक वर्ष से

अधिक समय की थी। अतः जैन धर्म में इसे वर्षीतप से संबोधित किया जाता है। आज भी जैन धर्मावलंबी वर्षीतप की आराधना कर अपने को धन्य समझते हैं, यह तपस्या प्रतिवर्ष चैत्र वदी 8 जो प्रथम तीर्थकर भगवान श्रीआदिनाथ दादा का जन्म एवं दीक्षा कल्याणक भी है से आरंभ होती है और दूसरे वर्ष वैशाख सुदी-3 अक्षय तृतीया के दिन पूर्ण होती है। तपस्या आरंभ करने से पूर्व इस बात का पूर्ण ध्यान रखा जाता है कि प्रति मास की चौदस को उपवास करना आवश्यक होता है। इस प्रकार का वर्षीतप करीबन 13 मास का हो जाता है। वर्षीतप जब पूर्ण हो जाता है तब भारत विख्यात जैन तीर्थ श्री शत्रुंजय पर जाकर अक्षय तृतीया के दिन पारणा किया जाता है। चांदी के बने छोटे से आकार के कलश इक्षु के रस के 108 भरे कलशों से पारणा किया जाता है।

तप-कर्मों की निर्जरा का अमोघ शस्त्र है :- हमारे सभी तीर्थकरों ने तप के द्वारा ही कर्म खपाएं है। केवलज्ञानी भगवंतों की यही देशना है, कर्म की निर्जरा के बिना आत्म-सुख की प्राप्ति नहीं है। एक ज्ञानीजन कहते है कि.... हंसता-हंसता कर्म बोधों हो, पण रोता रोता भी नहीं छुटेला-के अंतरों भारी दुःख झेलणों पड़ेला, अण वास्ते खूब साफ-चेत होवने चालो छोटा थी छोटा कर्म पण मोटी शिक्षा।

एक संत के पीछे एक आदमी गालियां बकता चला जा रहा था। संत बड़े शांत भाव से अपनी राह चले जा रहे थे। वह सारा इलाका जंगली था। यह इलाका समाप्त होकर जहां से बस्ती दिखने लगी, वहीं सत ठहर गए और उस व्यक्ति से बोले-भाई मैं यहां रुक गया हूं। अब जितना जी चाहे, मुझे गाली दे दो।

ऐसा क्यों ? उस दुष्ट आदमी से पूछा।

ऐसा इसलिये भाई कि इस बस्ती के लोग थोड़ा मुझे मानते हैं। उनके सामने तुम मुझे गाली दोगे तो वे तुमको जरुर सजा देंगे।

तो इससे तुझे क्या ? उस दुष्टने फिर पूछा।

''तुम्हें तंग किया जाएगा तो मुझे बहुत तकलीफ होगी। आखिर तुम इतनी दूर तक मेरे पीछे-पीछे आए हो तो मुझे भी तुमसे स्नेह हो गया है।'' संत ने प्यार से समझाते हुए कहा।

वह दुष्ट व्यक्ति संत के चरणों पर गिर पड़ा। जानते हो, वह संत कौन था ? ये थे शिवाजी के गुरु समर्थ रामदास।

चार्तुमास

प्रकृति का घटनाक्रम चलता रहता है। यह कृति रानी भी बड़ी चुलबुली है। इसके परिधान परिवर्तित होते रहते हैं। इसी परिधान के दौर में गर्मी आती है, ठंड आती है और आता है चौमासा। जैन शास्त्र में आषाढ़ी चौमासा का उल्लेख जोर-शोर से हुआ है। व्यवहार में भी इसी चौमासे को चौमासे के रुप में ख्याति मिली है। इस चार्तुमास का महत्व लौकिक जगत में है तो आध्यात्मिक जगत में भी है। क्योंकि इसी अवधि में बार-बार बादलों का योग बनता है, पानी की वृद्धि होती है, जो लौकिक समृद्धि का आधार है। लोकोत्तर जगत में इस अवधि में गुरु का योग बनता है, वाणी की वृष्टि होती है, जो आध्यात्मिक समृद्धि का आधार है। इस चार्तुमास में लौकिक सृष्टि बदलती है, आध्यात्मिक सृष्टि भी बदलती है। बहुत कुछ बदला नजर आता है।

साधुचर्या का एक शब्द है- चार्तुमास। चार्तुमास एक पारिभाषिक शब्द है, जो चार महिने की अवधि है, जिसे साधु विधिपूर्वक एक ही स्थान पर बिताते है। चार्तुमास शब्द का मूल अर्थ है- वर्षायोग। ग्रामों व नगरों में वर्षाऋतु में श्रमण, साधु, उपाध्याय व आचार्य एक स्थान पर चार महीने तक व्यतीत करते हैं। अतः इसे चार्तुमास कहते हैं। चार्तुमास आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी की पूर्व रात्रि से प्रारंभ होता है और कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि तक माना जाता है। चार्तुमास को स्थिर करने को कृतिष्ठायन कहते हैं। चार्तुमास धार्मिक जगत की धुरी है। वर्षावास या चार्तुमास का न केवल पर्यावरण व कृषि के दृष्टि कोण से वरन् धार्मिक दृष्किोण से भी विशेष महत्व है। वर्षाऋतु में जीवोत्पत्ति विशेष रुप से हो जाती है। पानी के सम्पर्क में आकर भूमि में दबे बीज अंकुरित हो जाते हैं। सीलन, फलन, फफूंद, काई की उत्पत्ति हो जाती है। त्रस व स्थावर जीवों की अधिकता के कारण उनकी विराधना की संभावना अधिक हो जाती है। जगह-जगह जल एकत्रित हो जाने से एक गांव से दूसरे गांव या शहर तक पगडण्डी द्वारा विहार संभव नहीं हो पाता है। आगम शास्त्रों में भी स्पष्ट निर्देश है कि चार्तुमास के दौरान साधु-साध्वियों को विहार नहीं करना चाहिये। चार्तुमास का संयोग हमारी मनःस्थिति में भरे विभिन्न प्रदूषणों को समाप्त करने के साथ ही दुष्प्रवृत्तियों को सत्य वृत्तियों में बदलने का कार्य करता है।

मैं मनोरमा

✽ पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

आपने मन में सोचा हो कुछ और, जबकि बनता है कुछ अलग ही, तब मन में क्या होगा ? धारणा के अनुकूल बनता है तब तो सभी स्वस्थ रहते हैं, लेकिन धारणा से विपरीत बनता है तब स्वस्थता रखनेवाले कितने ? मनुष्य का अहं इतना खतरनाक है कि धारणा से विपरीत भले ही अच्छा क्यों न हुआ हो ? किन्तु उसका स्वीकार नहीं करेगा। अच्छा या बुरा वह महत्वपूर्ण नहीं है परन्तु अहं के लिये महत्वपूर्ण है : मेरा सोचा होता है या नहीं ?

मेरी धारणा के अनुसार ही होना चाहिये। ऐसा अभिगम पुरुषों के लिये ठीक होगा परन्तु स्त्रीयों के लिये तो खतरनाक हैं। ऐसे अभिगमवाली स्त्री 'मर्दछाप' तो बन सकती है किन्तु सती नहीं बन सकती। सती बनने के लिये अहंकार का सर्वथा विलोपन जरुरी है। सती वही बन सकती है जो अपना समग्र अस्तित्व पति में स्थापित कर सके। पति की इच्छा वह मेरी इच्छा। पति का मार्ग वही मेरा मार्ग ! जिसका हृदय ऐसे पुकारता हो वही सती बन सकती है। हृदय की ऐसी पुकार हैं या नहीं ? वह तो प्रसंग आने पर ही पता चल सकता है।

मेरे ही जीवन में एक ऐसा प्रसंग आ बना।

नाम मेरा मनोरमा ! माता चूडामणि की लाड़ली बेटी ! नागपुर के राजा इभवाहन मेरे पिता !

युवावस्था में अयोध्या के राजा विजय के पुत्र वज्रबाहु के साथ मेरी शादी हुई।

मेरे पति वज्रबाहु मुझे लेकर अपने नगर की तरफ जा रहे थे। मुझे छोड़ने के लिये मेरा बड़ा भाई उदयसुंदर आया था। रथ वही चला रहा था। हम रथ में बैठे हुए थे। रुम.... झुम.... रुम.... झुम.... के मधुर ध्वनि के साथ हमारा रथ चल रहा था। मैं पति वज्रबाहु के साथ बातें करती हुई भविष्य के मधुर स्वप्नों में खो जाती थी। सामान्य नवोढ़ा के जैसे सपने होते हैं वैसे सपने मेरे भी थे। संसार को मैंने मेरी कल्पना की पींछी से रंग दिया था। माता-पिता द्वारा दिये गये धर्म के संस्कार हालांकि अंदर पड़े हुए ही थे। लेकिन अभी तो मैं उन सभी को भूलकर मनोरथों की मीनारें बना रही थी। यह उम्र ही ऐसी है, जब कल्पना के घोड़े उछल-कूद करते होते हैं ! किन्तु मुझे कहां पता था कि मेरा मार्ग अचानक ही बदल जानेवाला है ? मेरी कल्पनाओं के अनुरुप आ सके वैसा ही एक सुंदर जंगल रास्ते में आया। सामान्यतया जंगल डरावना होता है परन्तु यह जंगल बहुत ही सुहावना था। चारों तरफ जामुन, इमली, आम, नारियल आदि के वृक्ष ! मनोहर टीलों की हारमाला ! टीलों में से खल-खल.... बहते झरने ! देखते ही मन तर बतर हो उठे वैसे दृश्य ! ठण्डा मीठा पवन ! उर्मियों से मदमस्त होता हृदय ! वसंत ऋतु का समय ! आम्र की डाल-डाल पर कोयल का मीठा टहुकार ! टहुकार-टहुकार में मादकता का स्रोत !

रास्ते में वसंतशैल नामक टेकरी आई ! हम देखकर स्तब्ध हो गये। एक मुनि कायोत्सर्ग ध्यान में खड़े थे। ऐसे जंगल में मुनि ? क्या ध्यान की लगन है ? दुनिया के शोरगुल से लाखों योजन दूर ये मुनिवर आत्मा में अंदर उतर गये थे। उनके चेहरे की मस्ती अंदर की अपार शक्ति को अभिव्यक्त कर रही थी। समाधिजन्य आनंद इतना गाढ़ था कि जो पास में आनेवाले को भी आंदोलित कर रहा था। मुनिश्री का व्यक्तित्व इतना चुंबकीय बन चुका था कि किसी भी व्यक्ति को पास में जाने का मन हो जाता।

जंगल में मंगलमूर्ति समान ऐसे मुनिवर के पास जाने का हमें मन हो गया। हमारा रथ खड़ा रहा।

मेरे पतिदेव वज्रबाहु को तो मुनि के दर्शन-वंदन की बहुत होश थी। अतः सबसे आगे आनंद में चलने लगे। नवपरिणीत का धर्म-गुरु के प्रति आदरभाव किसी को भी आश्चर्यकारक ही लगता है। मेरे भाई उदयसुंदर भी आश्चर्यचकित होकर बोले : क्यों बहनोईजी ! दीक्षा-बीक्षा की तो भावना नहीं है न ! हो तो बोल देना हां ! अकेले -अकेले लड्डू मत खाना। कुछ हमारा भी हिस्सा रखना। मेरे भाई ने मजाक किया।

लेकिन यहां तो चाहिये था वही वैद्य ने कह दिया। मेरे पतिदेव ने मजाक का भी हार्दिक सत्कार किया-हाँ...भाई ! विचार तो कुछ ऐसा ही है। मानव-जीवन की सफलता संयम में है। ऐसा बचपन में माता-पिता ने सिखाया है। श्रावक उसे ही कहा जाता है जो सर्वविरति की लालसावाला होता है। सर्वविरति की तीव्र इच्छा के बिना देशविरति भी टिक नहीं सकती। श्रावक, श्रावकपने में तब ही टिक सकता है जब वह साधुत्व के लिये हमेशा आतुरता का अनुभव करता रहे। मात्र आतुरता का अनुभव करे इतना ही नहीं, समय आने पर साधु बन ही जाए। कैदी जेल में से भागने का मौका निरंतर ढूंढता रहता है। मौका मिलने पर भी कैदी न भागे ऐसा हो सकताहै ? मौका मिलते ही संसार से भाग निकले उसका नाम श्रावक ! श्रावक को यह पूरा संसार जेल लगता है ! जेल में से जितना

जल्दी छूट सके उतना अच्छा ! जेल को महल समझकर जो मस्त होकर पड़े रहते है वे तो अपनी ही जेल को, अपने ही बंधनों को ज्यादा से ज्यादा मजबूत बनाते रहते हैं। मेरी यह बात गलत हो तो कहो ! आपकी बात सौ प्रतिशत ही नहीं, किन्तु सवा सौ प्रतिशत सच है, परन्तु यह सभी अभी शोभा नहीं देता। **वीणायां वाद्यमानायां वेदोद्गारो न राजते।** शादी की शहनाई बजती हो तब वेद-वाणी शोभा नहीं देती ! सभी समय पर ही शोभा देता है। सर्वविरति के सपने बराबर है परन्तु यह सभी अभी नहीं। अभी अनुचित समय है। मेरे भाई ने कहा।

क्या बात कर रहे हैं ? अनुचित समय ? धर्म के लिये कभी अनुचित समय होता है ? मृत्यु के लिये कोई अनुचित समय नहीं होता तो धर्म के लिये अनुचित समय कैसा ? कोई बालक या कोई युवा मरे ही नहीं ऐसा विश्वास दे सकते हैं ? तो फिर किसी की धर्मभावना कैसे रोकी जा सकती है ? किसी की धर्मभावना को रोकना अर्थात् उसके जीवन में सफलता प्राप्त करने में रुकावट डालना। मेरे पतिदेव की वैराग्यवाणी अस्खलित बहती रही।

दूसरा सभी तो ठीक.... लेकिन मेरी छोटी बहन का आपने कुछ सोचा ? वह कितने मीठे-मधुर स्वप्न लेकर आपके पास आई हैं ? वह संसार-जीवन में कदम रखे उसके पहले ही उसके स्वप्ने चूर-चूर कर डालने हैं ? यदि ऐसा ही करना था तो शादी ही क्यों की ? शादी की भी कोई जवाबदारी है या नहीं ? जवाबदारी की गठड़ी छोड़कर भागना वह क्या फरारवृत्ति नहीं है ? पलायनवाद नहीं है ? ऐसे पलायनवाद को धर्म कहेंगे तो अधर्म किसे कहेंगे ?

आपके जैसे धर्मप्रेमी ऐसा कहेंगे तो अन्यत्र कहां आशा रखें ? संयम को छोड़कर संसार की ओर कदम भरना वही पलायनवाद है। संयम की तरफ के प्रयाण को पलायनवाद कहना या फरारवृत्ति कहना यह तो सूर्य को अंधकार कहने के बराबर है। अब रही बात मनोरमा की। सबसे पहले मनोरमा सती है या असती ? सती हो तो पति के कदम पर चलने की फर्ज है या नहीं ? और अगर असती हो तो उसकी वह जाने। धधगते आग के गोले जैसी वैराग्य झरती वाणी हम दोनों भाई-बहन सुनते रहे। इसमें भी ''सती या असती'' इस वाक्यों ने तो मेरे मन में जबरदस्त हंगामा मचा दिया। मेरे लिये विकल्प से भी''असती'' शब्द का प्रयोग क्यों ? इभ्रवाहन की पुत्री मैं और असती ? नहीं.... ऐसा कभी भी हो ही नहीं सकता। ऐसे शब्द का प्रयोग करने में भी मेरा अपमान है। पति का जो विचार वही मेरा विचार। पति की इच्छा वही मेरी इच्छा ! पति का मार्ग वहीं मेरा मार्ग ! इसमें दूसरा विकल्प ही कौन-सा ? यदि मेरे पतिदेव दीक्षा लेंगे तो मैं भी लेनेवाली ही हूं-मैं मन ही मन बोल उठी।

हम सभी वसंतशैल पर्वत पर चढ़ रहे थे और तब हमारा इस प्रकार का वार्तालाप चल रहा था।

मेरा भाई उदयसुंदर तो अभी तक ऐसा ही मान रहा था कि ये सभी तो बातें हैं। बातों से कुछ होनेवाला नहीं।

किन्तु.... मेरे पतिदेव ने तो कमाल कर दिया। मुनि के पास जाकर दर्शन-वंदन कर, धर्म सुनकर सीधी दीक्षा की ही याचना की।

उदयसुंदर ने कहा- अरे जीजाजी ! रहने दो ! मैं तो मजाक कर रहा था। मजाक को मजाक की तरह लो।

आपकी मजाक सज्जन की है या मूर्ख की ? सज्जन आदमी मजाक में भी बोलता है वह भी वज्रलेप बन जाता है।

उदयसुंदर के हृदय को बहुत धक्का लगा- वह बोल उठा- ठीक है तब यदि आप दीक्षा लेते हैं तो मैं भी दीक्षा लूंगा।

पति और भाई को दीक्षा लेते देखकर कौन-सी स्त्री चुपचाप बैठी रहती है ? मैं भी दीक्षा के लिये तैयार हो गई। हम तीनों को दीक्षा लेते देखकर हमें छोड़ने के लिये आये हुए पच्चीस राजकुमार भी दीक्षा लेने के लिये तैयार हो गये। वैराग्य में विलम्ब कैसा ? हम सभी ने वहीं के वहीं उसी टेकरी पर रहे हुए गुणसागर मुनि के पास दीक्षा ले ली।

आपको जानकर आश्चर्य होगा- दीक्षा लेने के बाद कभी मुझे विचार भी नहीं आया- हाय ! हाय ! मेरे सारे सपने चकनाचूर हो गये ! मेरे सभी मनोरथ मिट्टी में मिल गये। उलटा, मैं हमेशा आनंद में ही रही : ओह ! मैं किसी भाग्य-शाली ! मुझे कैसे उत्तम पति मिले.... जिनके कदम से कदम मिलाने से मेरा भी आत्मकल्याण हो गया ! विश्व को भी पता चला- सती का सतीत्व, पति का अनुसरण करने का दृढत्व कितना उच्च होता है ? कोई ऐसा न समझें- यहां प्रेम का क्षय हुआ है। नहीं, सचमुच तो यहीं पर प्रेम ने पूर्णता पाई है। दो शरीर मिलते है यह काम है। दो मन मिलते है वह प्रेम है और दो आत्माएं मिलती है वह भक्तिहै। काम से प्रेम और प्रेम से भक्ति सूक्ष्म है। जैसे-जैसे सूक्ष्मता आती जाती है वैसे वैसे प्रेम पवित्र बनता जाता है, अपार्थिव बनता जाता है। पार्थिव प्रेम में ही सर्वस्व माननेवालों के लिये अपार्थिव की कल्पना मुश्किल लगेगी, किन्तु ऐसा हो सकता है, इतनी बात तो मेरे दृष्टांत से सभी को स्वीकार करनी ही पड़ेगी।

पाप की सजा भारी...!

✻प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

कलह-क्लेश को टालने के लिये क्या करें :-

कलह के विषय में इतना जानने के बाद अब उसकी दवाई भी जान लें तो लाभ हो सकता है। संसार तो क्लेश-कलह से भरा पड़ा है। हम अपने को बचा लें तो बहुत अच्छा है। कलह से बचने का सबसे अच्छा उपाय है मौन रखने का। पता चले की यहां कलह हो रहा है। बढ़ रहा है। अभी उत्पन्न हो रहा है तो मौन रख लेना चाहिये। मौन की प्रतिज्ञा ही कर लेनी चाहिये। यदि न रह जाय तो थोड़ी देर के लिये कालक्षेप करना चाहिये अर्थात् समय बिताने के लिये बाहर निकल जाना चाहिये। दो घंटे साधु-संतों का समागम करके आना। जिससे एक बार वातावरण बदल जाय। न बोलने में (मौन रहने में) नौ गुण है। लाभ ही है। सास-बहु मे चलते हुए प्रतिदिन के झगड़े के कारण परेशान होकर बहु साधु महाराज के पास गई और कोई उपाय पूछा। साधु ने पास पड़े एक सफेद गोल पत्थर पर वासक्षेप डालकर बहु को दिया और कहा -देखो यह मंत्रित पत्थर है, अतः जब भी सासु बोले तब चुपके से तुम इसे तुम्हारे मुंह में रख लेना इसके प्रभाव से तुम्हारा हमेशा का झगड़ा मिट जाएगा। बहु ने घर जाकर ठीक वैसे ही किया। बोलती सासु के सामने घुंघट में छिपाकर वह पत्थर मुंह में रख दिया। इसका प्रभाव ऐसा ही हुआ कि बहु सामने एक अक्षर भी बोल न सकी। अतः झगड़ा आगे बढ़ा नहीं। 4-6 दिन यही प्रयोग चला सासु ने सोचा ये बहु तो कुछ भी बोलती ही नहीं है तो मैं अकेली क्यों बड़बड़ करुं ? वे भी बोलती बंद हो गई। घर में शांति हो गई। अन्यथा **''कलह-प्रियाः कलत्राः''** कहा ही गया है।

अतः **''मौनं सर्वार्थ साधनं''** यह कहावत ध्यान में रखकर चलें। प्रतिदिन मौन रखने की आदत डालें तो भी काफी लाभ होगा।

✻ समता रखनी। क्षमायाचना की वृत्ति रखनी चाहिये।

✻ सहनशीलता बढ़ानी चाहिये। मन को ही समझा लेना चाहिये। हे मन ! तुझे गधा, बन्दर कहने से क्या तू गधा-बंदर बन गया ? सहन शक्ति बढ़ाने से समता बढ़ेगी तभी ही चारों तरफ कलह की शांति होगी।

✻ वाणी पर संयम रखना सिखना चाहिये। शिष्य-सभ्य-ऊंची-आदरार्थी भाषा बोलने की आदत डालनी चाहिये !

✻ छोटे-बड़े के विनय-विवेक की मर्यादा रखनी चाहिये ! मर्यादा का भंग कभी भी नहीं करना।

✻ क्षमापना का भाव रखना चाहिये। मिच्छामिदुक्कडं का मंत्र बोलने से क्षमायाचना करने से कलह वहीं शांत हो जाता हैं। फिर आगे नहीं बढ़ता। अतः क्षमाशील बनकर शीघ्र ही क्षमा मांग लेनी चाहिये।

✻ भूलों को कबुल करने की अर्थात् स्वीकार करने की आदत बनानी चाहिये। बात के प्रारंभ में शीघ्र ही अपनी भूल स्वीकार कर लेने से झगड़ा खड़ा नहीं होता। आगे ही नहीं बढ़ता।

✻ प्रतिदिन रात्रि को सोते समय मेरा कोई दुश्मन-बैरी है ही नहीं ऐसी सुन्दर मैत्री भावना की प्रार्थना करके सोना चाहिये।

✻ कम से कम बोलने की, परिमित ही बोलने की आदत बनानी चाहिये। अधिक, जरुरियात से ज्यादा और निरर्थक बोलने से कलह बढ़ते है। अतः बिल्कुल कम बोलने से कलह घटता है।

✻ इतिहास में हुए कलहों के परिणामों का विचार करना चाहिये। पिता दशरथ जिस राम को राजगादी देने बोले थे, राम का राज्याभिषेक करने वाले थे उसके ब दले राम को वनवास मिला इसके भी कारण क्या है ! कैकई का कलह कैकई की दासी मंथरा ने रानी कैकई के कानों में फूंक मारी। रानी को चढ़ाई। कैकई बिना विचारे दासी मन्थरा की बात की असर में आकर दशरथ राजा के सामने लड़पड़ी। झगड़ा शुरु हुआ। वरदान मांगने के रुप में कैकई ने अपनी बात सच्ची करवाई। राजा दशरथ ऐसे समय में वचनबद्ध थे अतः लाचार थे और इस आन्तर कलह से बहुत दुःखी हुए यहां तक कि प्राण भी खोने पड़े। भूतकाल के ऐसे कलहों के परिणामों का विचार करके प्रसंग पर बचने का प्रयत्न करना चाहिये।

✻ गंगा स्नान करके लौट रहे सन्यासी ने दूर से आते-चण्डाल को देखकर घृणा करते हुए चिल्लाने लगे- अरे दूर हठ जा दूर भाग, चण्डाल कहीं का। चण्डाल दौड़ते हुए आकर सन्यासी से गले लग गया। हंसता हुआ कहने लगा आज मेरा भाई वर्षो के बाद मुझे मिला है इसका मुझे आनन्द है। इस

संघर्ष का लोग रास्ते पर तमाशा देखने लगे। संघर्ष-कलह में आमने-सामने ता-तूं करने वाले सभी सरीखे ही होते है। वहां छोटे-बड़ेका भेदभाव मिट जाता है। अतः बड़ा भी यदि छोटे के साथ कलह करता है तो उसका बड़प्पन घटता है। ईज्जत कम होती है। मान-सम्मान कम होता है।

✲ गंगा स्नान करके आते हुए सन्यासी के ऊपर एक वेश्या ने थूका। स्वामीजी दूसरी बार स्नान करके आए। वेश्या ने दूसरी-तीसरी बार भी थूका। स्वामीजी सात बार गंगा स्नान करके आए वेश्या ने सातों बार पान खाकर थूका यह देखकर लोगों ने कहा स्वामीजी आप एक बार वेश्या से झगड़ क्यों नहीं लेते ? दो सुना दीजिए। अभी भाग जाएगी। सन्यासी ने कहा.... अरे ! मैं सन्यासी होकर वेश्या से झगडूं ? किसी के साथ झगड़ना अर्थात उसके जैसा होना-बनना। यह मुझे पसंद नहीं है। मुझे क्या नुकसान है ? नुकसान बिचारी उसे है-सात पान खाने के सात रुपये उसके गए। मुझे तो गंगास्नान का ही पुण्य मिला है। यदि दुर्जन अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता है तो सज्जन को भी सज्जनता नहीं छोड़नी चाहिये।

✲ गंभीर बनने का प्रयत्न करना चाहिये। ज्ञान बढ़ाकर ज्ञान-गंभीर बनना चाहिये। निर्दम्भी-निष्कषायी सैंकड़ों संघर्ष से बच सकता है। सभी के प्रति पूज्य भाव-आदर भाव रखने कलह-कषाय कम होते हैं।

सज्जन-सुजस-सुशील-महंत, वारे कलह स्वभावे शांत॥ जगत के सभी जीव क्लेश-कषाय-कलह से बचकर वास्तविक सुख-शांति का अनुभव करके सर्वथा कलह रहित मुक्तिधाम को प्राप्त करें यही शुभ भावना...!

ॐ शान्ति.... ॐ शान्ति.... ॐ शान्ति....

आगे और भी है....!

चार्तुमास की महत्ता : चौमासे के शुभारंभ फल

जो मनुष्य केवल शाकाहार करके चार्तुमास व्यतीत करता है, वह धनी हो जाता है। जो श्रद्धालु प्रतिदिन मात्र एक बार भोजन करता है, वह धनवान, रुपवान और गण्यमान्य होता है। जो चार्तुमास में एक दिन का अंतर करके भोजन करता है, वह स्वर्ग जाने का अधिकारी बनता है। जो मनुष्य चार्तुमास में तीन रात उपवास करके चौथे दिन पारणा करने का नियम साधता है, वह पुनर्जन्म नहीं लेता। जो साधक पांच दिन उपवास करके छठे दिन पारणा करता है, उसे संपूर्ण विधि विधानों का फल मिलता है। जो व्यक्ति अयाचित (बिना मांगे) अन्न का सेवन करता है, उसका अपने भाई-बंधुओं से कभी वियोग नहीं होता है। चार्तुमास में प्रतिदिन जप करने से बुद्धि कुशाग्र होती है। हाथ में श्रीफल लेकर जो मौन रहकर जिनालय की नित्य 108 परिक्रमा करता है, वह कभी पाप में लिप्त नहीं होता। चौमासे के चार महीनों में धर्मग्रंथों के स्वाध्याय से बड़ा पुण्यफल मिलता है। मनुष्य जिस वस्तु को त्यागता है, वह उसे अक्षय रुप में प्राप्त होती है। चार्तुमास आध्यात्मिक साधना का पर्व काल है, जिसका सदुपयोग आत्मोन्नति हेतु करना चाहिये।

स्वाध्याय और भक्ति के चार माह- चार्तुमास (04 जुलाई से) यह मूलतः बारिश का मौसम होता है। शास्त्रों और ऋषियों ने यह समय भगवान और स्वयं पर ध्यान देने वाला बताया है। इन चार महीनों में यात्रा या कृषि कर्म मुश्किल होता था सो इसे भक्ति के लिए माना गया है। बारिश के इन चार महिनों मे हम व्रत-उपवास के नियम पालें और भगवान की भक्तिमें लीन रहे ताकि हमारा तन और मन दोनों स्वस्थ रहे।

चौमासे में बादलों के कारण सूर्य और चन्द्रमा से मिलने वाली ऊर्जा हम तक नहीं पहुंच पाती। अधिक नमी वाले वातावरण के कारण हमारी पाचन-क्रिया भी प्रभावित होती है। भारतीय ऋषि-मुनियों द्वारा व्रत में एक बार, एक दिन छोड़कर भोजन करने का विधान बनाया गया। जिसके पीछे भी यही कारण है कि चौमासे में अधिक मेहनत न करने के बाद भी व्यक्ति स्वस्थ बना रहे तथा शारीरिक क्रियाओं का तालमेल बना रहे।

चार्तुमास की यह विशेषता है कि सभी धर्म के सभी मत इसे साधनाकाल मानते हैं। क्योंकि चार्तुमास में साधकों का लक्ष्य, जप, भगवत स्मरण और पूजन-अर्चन होता है। साधनाकाल होने से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन व पलंग पर शयन निषेध कहा गया है। आयुर्वेद में लिखा गया है-चौमासे में पत्तेदार शाक-सब्जियों का भी उपयोग स्वास्थ्य को हानि पहुंचाता है।

चार्तुमास में बदलेगा जीवन

जैन धर्म में चार्तुमास 4 जुलाई से प्रारंभ हो गए है। इस चार्तुमास के दौरान संत और साध्वी के साथ श्रावक-श्राविकाएं व्रत, तप व साधना करेंगे। वे धर्मावलंबियों को नियमित सत्य, अहिंसा और संयम का मार्ग बताएंगे। उनके प्रवचन का लाभ जैन समाज सहित अन्य लोग भी ले सकेंगे। बताया जाता है कि चार्तुमास के दौरान बड़ी संख्या में जीव-जंतु पैदा होते हैं। जैन धर्म के अनुसार हिंसा से बचने के लिए संत व साध्वियाँ चार्तुमास किसी निश्चित एक ही स्थान पर बिताते हैं। चार्तुमास के दौरान ज्यादातर लोग धार्मिक हो जाते हैं तथा हिंसा से हर संभव बचने का प्रयास करते हैं। इसके अंतर्गत शारीरिक, मानसिक, वाचिक और भावनात्मक हिंसा शामिल है। कठिन व्रत से लोग जीवन को मर्यादित और संयमित रखने का प्रयास करते हैं।

लोगों का विवेक जागृत हो जाता है। संतों की तपस्या, त्याग व प्रवचन का लाभ स्वयंमेव दिखने लगता है। अधिकांश लोग सूर्योदय के बाद और सूर्यास्त से पूर्व केवल गरम पानी पीते हैं। कुछ लोग सीमित द्रव्य और दिनचर्या को सीमित कर देते हैं और ज्यादातर समय निवास पर ही बिताते हैं। इस दौरान साधना और तप करते हैं। बहुत से लोग इस दौरान संत और साध्वी की तरह क्षमता अनुसार एक दिन, एक सप्ताह व महीनों तक कठिन उपवास रखते हैं। बहुत से लोग नशा एवं बुरी लत को छोड़ने का संकल्प लेंगे। कई लोगों का जीवन स्तर सुधर जाएगा। जैन संत-साध्वी के संपर्क में आने से लोगों के जीवन में व्यापक परिवर्तन देखने को मिलेगा। इस चार्तुमास के दौरान मंदिरों में सुबह पूजा-अर्चना और साधना के बाद प्रवचन का भी आयोजन होगा। प्रवचनों में खास तौर पर सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, व्यसन-मुक्ति, जीवन विज्ञान, ब्रह्मचर्य आदि को जीवन में अपनाने के उपाय बताए जाएंगे।

चार्तुमास क्यों ?

1-**आत्मा से परमात्मा की ओर जाने के लिए।**
2- **वासना से उपासना की ओर।**
3- **अहं से अर्हम् की ओर।**
4- **भोग से योग की ओर।**
5- **हिंसा से अहिंसा की ओर।**
6- **प्रदर्शन से दर्शन की ओर।**
7- **सम्यग्दृष्टि और जनजागरण की ओर।**
8- **एकांत की पावन साधना।**
9- **आसक्ति से अनासक्तिकी ओर जाने के लिए।**
10-**स्वाध्याय के लिए।**
11-**तपस्या का मौसम है।**
12-**अपने घर लौटने की दस्तक है।**
13-**जिनवयणी के प्रचार-प्रसार का समय है।**
14-**अच्छे स्वास्थ्य का समय है।**
15-**जैन शासन की पुण्य-प्रभावना के लिए।**

शाम के समय प्रतिक्रमण होगा। इसमें श्रद्धालु, हिंसात्मक कर्मो के लिये ईश्वर से क्षमा-याचना करते है। जैन धर्म के अनुसार जब व्यक्ति अपनी दिनचर्या के दौरान भावना या कर्म से किसी के अधिकारों का अतिक्रमण कर लेता है, तो शाम को वह क्षमा याचना करता है, जिसे प्रतिक्रमण कहा जाता है।

कठिन तपस्या करके जैन समाज के लोग चार्तुमासकाल में अपने द्वारा जीवन में की गई भूलों को सुधार कर जीवन को मोक्ष-प्राप्ति की ओर ले जाएंगे।

चार्तुमास में आर्द्रता, सीलन विशेष होती है जिसके कारण अपच, अजीर्ण, वायु-विकार जैसी बीमारियों की संभावना बढ़ जाती है। पानी प्रदूषित हो जाता है। मार्ग अवरुद्ध हो जाते है। बाढ़ आ जाती है।

✻ *अमीन पाशा अफ्रीका में औषधि शोध संस्थान की ओर से काम करने गए थे। जहां जड़ी-बूटियों की खोज में घूम रहे थे। एक गांव में पहुंचे तो देखा कि वहां शीतला का भयानक प्रकोप है। गुलामों की उस बस्ती में लोग मर रहे हैं। ''यहां से जल्दी चलिए। यह छूत का रोग है।'' सहकारी ने कहा-''तुम जाओ। मुझे यहां खुदा की पुकार सुनाई पड़ रही है।'' पाशा ने यात्रा रोक दी और उस गाँव में रोगियों की सेवा में जुट गये। अनेक रोगियों को पाशा की सेवा ने जीवन दिया। अंत में रोग उन्हें लगा। चेचक निकली। मरते-मरते वे प्रसन्न थे। कह रहे थे-''खुदा की मेहरबानी है, जो उसने इस नाचीज को गरीब-निराधार रोगियों की सेवा करने का अवसर दिया। मैं बड़े संतोष से मर रहा हूं।''*

चार्तुमास यानि साधना से सफ्लता....

शेयर करें:-

जब प्रकृति खुद इंसान और भगवान को मिलाती है.... आषाढ़-ज्येष्ठ माह के बाद आता है और श्रावण के पहले। यानि आग बरसाती गरमी का अंतिम चरण है और मनमोहक वर्षा का प्रारंभ। इसी आषाढ़में स्वयं को सिर से पैर तक परिवर्तित करती है। गरमी की तपन त्यागती है और वर्षा का स्वागत करती है। आषाढ़ का महीना है जब प्रकृति अपना रंग-रुप बदलती है। गर्मी की तपन में झुलसे तन-मन पर जब वर्षा की फुहारें पड़ती है तो हमारे आनंद का ठिकाना नहीं रहता। जीवन में आनंद की बौछार के साथ आषाढ़ ईश्वर के प्रति कृतज्ञ होने का संदेश भी है, क्योंकि यहीं से चार्तुमास की साधना आरंभ होती है।

साधना के 120 दिन:-

शब्दकोष में आषाढ़शब्द के बड़ेसामान्य से अर्थ मिलते हैं। 27 नक्षत्रों में से दो नक्षत्र है बीसवें और इक्कीसवें क्रम के, जिनके नाम पूर्वोषाढ़ा और उत्तरषाढ़ा है। ये जिस मास की पूर्णिमा पर आते हैं, वह मास आषाढ़ मास कहलाता है। कोई भी एक नक्षत्र किसी एक पूर्णिमा पर आकर उसे आषाढ़ बना देता है। बस यहीं से आषाढ़ का धर्म शुरु होता है, आषाढ़से संन्यास प्रारंभ होता है और संकेत मिलता है कि इसी मास से चार्तुमास प्रारंभ होता है, जो पूरे चार मास तक चलने वाली साधना है। इन चार महीनों की साधना यदि सफलतापूर्वक पूरी हो जाए, तो इंसान की जिंदगी का स्वरुप और जीने का ढंग ही बदल जाता है।

वैष्णव परम्परा के अनुसार:-

देवशयनी एकादशी (इस वर्ष 4 जुलाई से) से चार्तुमास या चौमासा प्रारंभ हो जाता है। चार्तुमास का अर्थ है चार महीने। आषाढ़शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक के चार मास का समय चार्तुमास कहलाता है। शास्त्रों में इस दौरान आने वाले सावन, भादो, आश्विन और कार्तिक मास में खानपान और व्रत के नियम और संयम बताए गए हैं। इनमें स्वेच्छा से नियमित उपयोग के पदार्थों का त्याग एवं ग्रहण करने का विधान है। जैसे मधुर स्वर के लिए गुड़ लंबी उम्र एवं संतान प्राप्ति के लिये तेल, शत्रु बाधा से मुक्ति के लिए कड़वा तेल, सौभाग्य के लिए मीठा तेल आदि का त्याग किया जाता है।

इसी प्रकार सुंदरता के लिए नियत मात्रा में पंचगव्य यानि गाय के दूध, दही आदि पांच पदार्थों से बने खाद्य का सेवन करना चाहिये। बुरे कर्म फल से मुक्ति के लिए एक समय भोजन का उपवास करने का व्रत किया जाता है।

जो लोग चार्तुमास का व्रत करते हैं, उनको सावन में हरी सब्जी, भादो में दही, आश्विन में दूध और कार्तिक में दाल नहीं खाना चाहिये। इसके अलावा पलंग पर सोना, पत्नी के संग, झूठ बोलना, मांस, शहद और दूसरे से मिले दही-भात का भोजन करना, मूली एवं बैंगन का त्याग तो शास्त्रोक्तविधान के अनुसार जीवन भर के लिये करना है।

चार्तुमास में श्रावकों के लिए न करने और योग्य बातें:-

- ✻ आटा, मसाला का स्टॉक नहीं रखना।
- ✻ नालियों में धान्य कण न बहाना।
- ✻ जूठन यथा संभव नहीं छोड़ना।
- ✻ अनछाना पानी नहीं पीना।
- ✻ रात्रि भोजन नहीं करना।
- ✻ जमीन नहीं खोदना।
- ✻ बासी खाना का उपयोग नहीं करना।
- ✻ उपवास, एकासना आदि की साधना।
- ✻ हरी वनस्पति की सीमा, पत्तियों का परहेज करना।

✻ एक आलसी ऊँट ने बहुत लंबे समय तक तप किया। देवताओं ने प्रसन्न होकर वरदान मांगने के लिये कहा-आलसी ऊँट ने मांगा कि एक जगह बैठे-बैठे ही दूर-दूर की घास चर लिया करें। अपनी गरदन को एक मील लंबा दूर करा लिया। सो बहुत प्रसन्न था। बरसात आई। उसने सिर छुपाने की कोई जगह तलाश की। एक गुफ्त में सिर भर रख सका। इतने में दो सियारों का जोड़ा उसमें घुस पड़ा। उन्होंने ऊँट की गरदन काट डाली और उसका आहार कर लिया। वरदान भी बेकार चला गया।

ऐसा भी करें:- बच्चों का चार्तुमास

सुबह सवेरे कमर पर किताबों का बोझ लादे कंधे पर पानी की बोतल लटकाएं स्कूलों की ओर दौड़ते चुलबुले चंचल बच्चों की कतारें एक सौंदर्य को जन्म देती है, यों जैसे कलियों को कपड़े पहनाकर दौड़ाया जा रहा हो। ये कलियां अब कुछ दिनों तक यों रास्ते पर सुबह-सुबह नहीं मिलेगी। जैसे वर्षाकाल में साधु-संत चार्तुमास करते हैं, वैसे ग्रीष्मकाल में बच्चे चार्तुमास करते हैं।

साधु-संतों का चार्तुमास जैसे शिष्यों, भक्तों, अनुयायियों के लिए एक आयोजन है, वैसे ही बच्चों का ग्रीष्मावकाश अभिभावकों के लिये एक आयोजन है। अक्सरआयोजन प्रयोजन हीन हो जाते हैं, झंझट की तरह हो जाते हैं जिसमें निपटाने की फिक्र अधिक होती है, नियोजित करने का आनंद न्यून होता है। बच्चों के इस चार्तुमास को निपटाने के कई रास्ते बना लिए गए है- विद्यालय जल्दी खोल दिये जाते है, बच्चों का हॉबी क्लासेज में भेजा जाता है, बड़ों के साथ थोड़ा पर्यटन करवाया जाता है, तरह-तरह के शिविरों में भेजा जाता है आदि-आदि।

एक कुनकुनेपन के साथ बच्चों का ग्रीष्मावकाश निपटा दिया जाता है। वैसे भी एक स्कूली बच्चे का जीवन लगभग बंदी की तरह होता है। हेरमन हेम्से के हिन्दी में अनूदित उपन्यास ''चक्के तेल'' में स्कूली बच्चे की मार्मिक स्थिति का वर्णन हुआ है। बड़ों की दुनिया में बचपन पीड़ित, प्रताड़ित होता है।

यह बचपन अपने चार्तुमास में खिलने की स्वतंत्रता पा जाए, क्या बड़ों की दुनिया कलियों के संसार पर यह मेहरबानी कर सकती है ? यह मेहरबानी बड़ों और बच्चों के सम्मिलित संसार का सौंदर्य लौटाने की पहल की तरह होगी, यदि ' 'बड़े '' नियंत्रण के तरीकों से बाहर आकर नियोजन के आनंद में बच्चों के साथ एकरस, एकतान होकर सहयोग करें।

तनिक कल्पना करें, बच्चे अपने चार्तुमास में स्वतंत्रता में स्वयं की कल्पना और रचनाशीलता को भरपूर निमंत्रण दें, खिलें, खेलें, नाचें, गाएँ, झूमें- बचपन को भीतर से बाहर तक उगमनें दें, उछलने दें, चहकने दें, महकने दें।

गाँव-गाँव, शहर-शहर, कस्बे-कस्बे, गलियों-मोहल्लों में चार महीने बच्चों के नाम कर दिए जाएँ। बाल मेले लगाए जाएँ। बालक्रीड़ा समागम हों, बाल कवि सम्मेलन हों, बाल कलाकार संगम हों, बाल परिधान उत्सव हों, बाल चर्चाएं हों, बाल चौपाल हो, बालगोष्ठियाँ हों, बाल नाटिकाएँ हों, बाल फिल्में हों, बाल पत्रिकाएँ हों, बाल-पत्र हों, बाल समाचार चैनल/बुलेटिन हों। बहुत सारे पेड़, पौधे हों, फूल हों, तितलियां हों, चारों तरफ बच्चों की दुनियां हों।

शायद बच्चों का यह चार्तुमास कँटीली, नुकीली, झाड़-झंखाड़ भरी बड़ों की दुनिया को रंगों और सुगंधों से भर सके। अपने भोलेपन को छोड़ चुकी बड़ों की दुनिया बच्चों के भोलेपन को जी सके, जान सकें और जाग सकें। ग्रीष्म की तपिश में भीतर से शांति और शीतलता भर लेने की यह एक सुगम राह हो सकती है।

जब प्रकृति बने गाइड

गरमी में हरे वृक्षों के फूल-पत्ते फिर से कोंपलों के रुप में फूटते है और वर्षा का आनंद लेने के लिये स्वयं को उत्साहित करते हैं। सागोन, अंजन, जामुन, हल्दू, कत्था, शिरीष, धावड़ा, चिरौंजी, कदंव और बिल्बपत्र इसी आषाढ़ में अपने पूरे रंग में रंग जाते है। प्रकृति यह संदेश देती है कि दो अलग-अलग ऋतुओं के संधिकाल का भी उत्सव रंगमय हो सकता है। यह भी सृजन का काल हो सकता है। मतलब कि हर पल सृजन का पल हो सकता है। ये सारे वृक्ष, आषाढ़ में उत्पन्न, पल्लिवित, पुष्पित, फलित होने वाली सारी वनस्पति दो विपरीत ऋतुओं के बीच अपने वजूद को बनाए रखते हुए हमें सिखाती है कि हम भी विपरीत परिस्थितियों में किस तरह स्वयं के अस्तित्व की रक्षा कर सकें। न सिर्फ रक्षा कर सकें, बल्कि पल्लवित, पुष्पित और फलित भी हों।

पुद्‌गल द्रव्य की संभाल रखों तो भी वह कभी न कभी चला जायेगा ही और जो हमारा नहीं है वह हमारा होनेवाला नहीं है, इसलिये लाचार होकर दीन बनना किस कामका ?

बिटिया रानी...!

✻ पू.आ.श्री जितरत्नसागर सूरीजी म. ''राजहंस''

प्यारी प्यारी बिटिया...!

किसी पुस्तक में एक घटना पढ़ी थी।

एक कन्या की शादी हुई। विवाह को चार महिने भी व्यतीत नहीं हुए थे कि उसके भाई को फोन आया- तुम्हारी बहन को ले जाईये। ये हमारे घर में नहीं निभ सकती। हम सभी इससे घबरा चुके है।

भाई को आश्चर्य हुआ। चार महिने में ऐसा क्या हो गया जो घर के सभी लोग घबरा गये ?

वह दौड़ते हुए आया। वह अपनी बहन की जीभ को जानता था। वह कैंची से भी ज्यादा तेज चलती थी।

चुपचाप वह अपनी बहन से मिला। बात-बात में वह बोला- बहना...! व्यापार में खूब घाटा गया है। ज्योतिषियों ने कहा है- यदि तेरी बहन पूरे दिन अपने मुंह में सोने की चेन रखे तो बरकत आ सकती है। मगर मैं तुझे कैसे कहूं कि तू सोने की चेन मुंह में रख ?

बहन की आंखें से भर आयी। वह बोली- भैय्या...! तेरे लिये मैं चैन तो क्या सांकल भी मुंह में रख सकती हूं।

भाई ने अपने समधी को मनाया- ''आठ दिन देख लीजिए अन्यथ मैं आकर ले जाऊंगा।''

एक सप्ताह बीत गया।

भाई ने फोन किया- कैसा है अब...? लेने आऊं क्या मैं अपनी बहन को ?

नहीं, नहीं, मत आना। आपकी बहन तो देवी है। देवी। इसने तो हमारे घर को भी स्वर्ग बना दिया।

My Dear...!

यह जीभ की कमाल थी। यह आग भी लगाती है और बाग भी क्या लगाना है, यह व्यक्ति को सोचकर निर्णय करना होता है।

एक धनाढ्य से अमेरिका में ऑफ हो गया। उसने उसकी सारी मिल्कत उसके नाम अवश्य की मगर एक शर्त भी रखी।

मेरी प्रत्येक वार्षिक श्रद्धांजलि के दिन समाचार पत्र में एटोटाइज देना-**''यदि मैंने अपनी जीभ ग्रेराज में रखी होती तो मेरे पति दीर्घायु होते।''**

बेटा...!

सारे दिन बकवास करती दुनिया के लोगों को मालूम नहीं है कि मौन की महिमा क्या है ?

शेक्सपियर ने लिखा है- **''मौन ही जीवन का आनंद का खुशी का संदेश है। मैं खुश हूं मगर कम खुश हूं। अगर मैं बता सकता कितना।''**

मेरी प्यारी बेटिया...!

मौन तो आत्मा की मातृभाषा है। इसमें आत्मा को जितनी सुविधा और अनुकुलता रहती है इतनी दूसरी किसी में भी नहीं रहती है।

जानती है बिटिया...!

मनुष्य ज्यादा क्यों बोलता है ? इसलिये कि वह अपनी गलतियां छुपाना चाहता है। मगर वह एक बात तो भूल ही जाता है कि वाचालता स्वयं भी एक प्रकार की भूल है। गलती है। नीति शास्त्र में कहा है-

मौखर्य लाधवकरं, मौन मुन्नतिकारणम्।
मुखरं नपुरं पादे, कछे हारो विराजते॥

ज्यादा बोलने की आदत से नालेशी होती है। मौन से उन्नति होती है। झांझर आवाज करता है अतः पैर में पहना जाता है और हार मौन रहता है तो कष्ठ में धारण किया जाता है।

मेरी प्यारी लाड़ली...!

रमण महर्षि ने सच ही कहा- **''मौन सर्वोत्तम भाषा है।''**

मूर्ख व्यक्ति जब अवसर मिलने पर गाली-गलोच करता है। बेफाम शब्दों की वर्षा करता है, ऐसे समय में समझदार व्यक्ति मौन धारण करता है। किसी ने ठीक ही कहा है- उस खराब चोघड़िये में मौन रखने से सामनेवाले को खरीदा जा सकता है।

दुनिया का कोई भी समझदार व्यक्ति खूब ही सरलता से समझ सकता है कि ऐसे समय मौन रहनेवाला व्यक्ति कितना महान हैं। एक हिन्दी मुहावरा है- **''एक चूप सौ को हराती है।''**

चाणक्य तो इससे भी आगे बढ़कर कहते है- **''मौने च कल हो नास्ति।''** जब मौन रहता है तब किसी भी प्रकार के विवाद की जगह नहीं रहती है।

पुत्री...!

दुनिया कहती है एक स्त्री से चूप रहना मुश्किल है परन्तु मुझे विश्वास है कि तू इस बात को असत्य सिद्ध करेगी।

तेरे सम्पर्क में आने वाली स्त्री को तू सरलता से स्वीकार सके इसके लिये तू यह बात हमेशा याद रखना एवं अच्छे न लगे ऐसे शब्दों को लाइटली लेना।

परन्तु जब अपनी स्वयं की बात हो तब उस बात का कोई वजुद मत रहने देना !

- तेरे प्यारे डेडी !

चक्रवर्ती की राजधानी

✱ मुनिश्री जितरत्नसागरजी ''राजहंस''

मध्यखण्ड के अतिमध्य भाग याने लवण समुद्र तथा वैताढ्य पर्वत से 114 योजन 11 कला दूर अयोध्या नामक नगरी चक्री की राजधानी बनने का गौरव लेती है यह राजधानी प्रमाणांगुल-एक तरह का जैन पारिभाषिक गणित से 12 योजन लंबी तथा 9 योजन चौड़ी होती है। इस नगरी का निर्माण मनुष्य नहीं बल्कि चक्रवर्ती के पुण्य प्रताप से धनद वैश्रवण नामक देव अपनी देवशक्ति से मात्र। अहोरात्रि याने एक दिन तथा एक रात्रि में बनाता है।

राजधानी का स्वर्णमय किला 1200 धनुष ऊँचा 800 धनुष चौड़ा रहता है, ईशान कोण में नाभी राजा का 7 मंजिला महल स-समचोरस स्वर्णमय बनाया जाता है। पूर्व दिशा में चक्रवर्ती भरत का गोल प्रसाद अग्निकोण में बाहुबली का प्रासाद एवं दोनों भाईयों के बीच शेष 98 भाईयों के प्रासाद रहते हैं। मध्य भाग में राजा ऋषभदेव का 21 मंजिल का ''त्रैलक्य विभ्रम'' नामक प्रासाद बनाया जाता है। जगह-जगह जिन मंदिर, अन्य राजा मांडलिकों के भवन तथा अन्य नागरिकों के हजारों घर की श्रेणी बनाते हैं। नगर बाहर चार दिशाओं में चार वन का निर्माण किया जाता है। प्रत्येक वन में एक अशाश्वत जिनालय रहता है।सभी उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी में भरत तथा ऐरवत क्षेत्र में मध्य खण्ड में ऐसी महानगरी निर्मित होती है तथा कालक्रम से पुनः नष्टहो जाती है। महाविदेह क्षेत्र की 32 विजयों में भी ऐसी नगरी रहती है जिसे चक्रवर्ती अपनी राजधानी बनाता है।

मध्यखण्ड में उत्पन्न चक्रवर्ती भरत क्षेत्र के मध्यखण्ड सहित 6 खण्ड के सभी राजा महाराजाओं पर विजय प्राप्त करता है एवं भरतेश्वर बनता है। छः खण्ड का साम्राज्य सिर्फ चक्रवर्ती ही भोग सकता है।

चक्रवर्ती के छह खण्ड की साधना के विषय की संक्षिप्त जानकारी मैं आपको देता हूं।

चक्रवर्ती की आयुधशाला में अचानक एक चक्र उत्पन्न होता है इससे सभी को यह विश्वास हो जाता है कि 14 स्वप्न से सूचित यह व्यक्ति चक्रवर्ती है। बस चक्र की पूजा करने पर चक्ररत्न आगे चलता है और पीछे चक्रवर्ती अपनी विराट सेना लेकर दिग्विजय करने निकल पड़ता है। चक्रवर्ती हाथी के होदे पर खडग्रत्न एवं सेनापति दण्डरत्न लेकर अश्व पर सवार होकर प्रयाण करते हैं। सर्वप्रथम मध्यखण्ड के राजाओं को पराजित करते हुए चक्रवर्ती जम्बूद्वीप की जगती पर आते है जगती याने कोट, यह जगती लवण समुद्र और जम्बू द्वीप की मर्यादा बांधती है।

यह जगती वज्ररत्न की 8 योजन ऊँची 12 योजन मूल में चोड़ी एवं 4 योजन ऊपर से चोड़ी रहती है, ऊपर अतिमध्य भाग में सभी तरफ वलयाकार वाली 2 गाऊ ऊँची एवं 500 धनुष चौड़ी पद्मवर वेदिका है मानो विशाल सड़क ही है। उसकी दोनों तरफ 250 धनुष न्यून 2 योजन विस्तार करनेवाले वन हैं एवं चारों तरफ विजय-विजयंत-जयंत और अपराजित नामक द्वार है एवं इसी नाम के अधिष्ठायक देव वहां चौकी करते हैं।

पद्मवर वेदिका पर व्यन्तर देव-देवियों की चहलकदमी हर समय वहां रहती है। ये उनके पिकनिक स्पॉट है वहां व्यंतर देवी-देव क्रीड़ा करते रहते हैं उन वनों में पृथ्वीकायमय पंचवर्णिय घास होती है, वायु से परस्पर मणी और तृण टकराने से स्वाभाविक गंधर्वो के गीत जैसे कर्णप्रिय ध्वनियां उत्पन्न होती है।

दोनों तरफ वनखण्डों में बावड़ी है, छोटे बड़े पर्वत है तथा प्रत्येक टेकरी पर प्रासाद मकान भी है। प्रत्येक प्रासादों में एक-एक आसन है जहां ये व्यंतरदेव देवी बैठते हैं तथा क्रीड़ा करते हैं।

जगती के द्वार से निकलकर चक्रवर्ती सेना सहित मागध, वरदाम, प्रभास नामक तीर्थ याने समुद्र या नदी में उतने के मार्गो को तीर्थ करते हैं, में अश्वसहित रथ से समुद्र में उतरता है। जब रथ के चक्र/पहिये आधे पानी में डूब जाते हैं तब चक्री उन मागध, वरदाम, प्रभास देवों को लक्ष बनाकर उनकी राजधानी जो कि लवण समुद्र में किनारे से 12 योजन दूर रहती है उस तरफ धनुष पर बाण चड़ाकर फैंकता है।

सन.... न....न....न करते हुए तीर उन देवों के सिंहासन से टकराता है और वे देव कोपायमान हो जाते हैं परन्तु ज्ञान का उपयोग करने पर एवं तीर पर अंकित नाम से उन्हें ज्ञात होता है कि चक्रवर्ती आया है तो उसी क्षण भेटना लेकर चक्री के समक्ष उपस्थित होकर आज्ञा स्वीकार कर चक्री की इस तरफ की सीमा की रक्षा का दायित्व स्वीकारता है, चक्री भी प्रसन्न होकर इन्हें विसर्जन करता है।

चक्रवर्ती छह खण्ड साधना में 13 तेले करता है यहां से चक्ररत्न के मार्गदर्शन में सभी सिन्धु नदी के उस तरफ सिन्धु निष्कूट खण्ड याने दूसरा खण्ड जीतने जाता है पश्चिम दिशा में सागर से बड़ी सिन्धु नदी है उसे चर्मरत्न पर बैठकर पार कर दूसरे खण्ड में जाकर जीत लेता है। फिर सभी वैताढ्य पर्वत के निकट मध्यखण्ड में आते हैं।

जीने की कला सिखाता है धर्म

✻ सुनील जैन

धर्म का अर्थ है- सत्य अहिंसा एवं संयम को धारण करना। कहा भी जाता है कि **''धारतयति इति धर्म''** अर्थात् जो धारण किया जाए-धर्म है। हम बोल-चाल की भाषा में भी बोलते है कि- आपस में लड़ना-झगड़ना पशुओं का स्वभाविक गुणें को छुपाने वाला विकृति का पर्दा दूर होता है और आत्मा के प्राकृतिक गुण प्रकाशमान होने लगते हैं, उसे भी धर्म कहा जाता है। धर्म के स्वरुप पर प्रकाश डालते हुए शास्त्र में कहा हैं-

देशयामि सीमचीनं धर्म कर्मनिवर्हणम्।
संसारदुःखतः सत्वान् यो परत्युतमे सुखे ॥

अर्थात्- जो संसार के दुःखों से बचाकर इस जीव को उत्तम सुख प्राप्त करावे वह धर्म है। वैदिक धर्म में भी ''वैशेषिक दर्शन'' के अन्तर्गत वैदिक दार्शनिक कहते हैं-

''यतोऽभ्युदयनिश्रेयसिद्धिः से धर्मः'' अर्थात् जिससे सर्वागीण उदय समृद्धि तथा मुक्ति की प्राप्ति हो, वह धर्म है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि धर्म किसी व्यक्ति अथवा किसी समुदाय विशेष का नहीं अपितु प्रत्येक व्यक्ति का है।

जो सभी प्राणियों का धारण-पोषण करता है और समाज को सद्मार्ग बताता है उसे धर्म कहते हैं। धर्म का आशय मानव समाज के नियमन एवं अवस्था के अनुरुप जीवन यापन, कर्त्तव्य, धर्म तथा आचार-विचार के नियम आदि का मार्ग धर्म अन्तर्गत प्रशस्त किया गया है। धर्म मानव भक्ति है, मानव-भक्ति एक साधना है। एक अनग मार्ग है जिस पर संकीर्ण विचार वाले लोग नहीं अन्तर्मुखी भी होता है। अपने भीतर सकारात्मक विचार और ऊर्जा के जारगण का प्रयास ही धर्म है जो मानवता की ओर ले जाता है। धर्म ज्ञान, कर्म और प्रेम की त्रिवेणी है। मनुष्य की प्रधान तीन वृत्तियां सत्य, प्रेम और शक्ति हैं। इन्हीं तीनों के विकास द्वारा मानव की उन्नति होती है। धर्म के दस लक्षण बताए गए हैं- क्षमा, मार्दव, सरलता, पवित्राता, संयम, सत्य तप, त्याग आकिंचन और ब्रह्मचर्य। इनका पालन करना मनुष्य का कर्त्तव्य है और यह कर्त्तव्य ही धर्म है।

धर्म जीवन जीने की कला है। धर्म का कार्य विकार को मिटाना है। अगर वर्षो तक धर्म के द्वार पर जाकर भी हमारे विकार नहीं मिट पाएं है, तो मनुष्य के द्वारा यह आत्म-मनन किया जाना चाहिये कि वास्तविक तौर पर क्या वह धर्म के मार्ग पर चल रहा है ? धर्म का जन्म मनुष्य के सम्यक् सोच सम्यक् आचरण प्रदान करने के लिये हुआ था, लेकिन व्यक्ति धर्म के नाम पर इन सबसे अलग होकर सम्प्रदाय के मोह में उलझ गया। धर्म सिद्धांतों के आचरण तो कम किन्तु आग्रह ज्यादा हो गये हैं। लोग धर्म की चर्चा ज्यादा करने लगे हैं और उसके सिद्धांतों के आचरण का पालन कम। जीवन का धर्म गौण हो गया है और नाम का धर्म मुख्य हो गया है। धर्म के नाम पर मर मिट जाने वाले कई मिल जाते हैं। पर ईमानदारी से धर्म का आचरण करनेवाले कितने हैं। व्यक्ति ने इस बात की फि क्र छोड़ दी है कि वह धार्मिक हुआ है या नहीं ! वह तो मात्र इस चिंता में रह गया कि वह जैन, हिन्दू, बौद्ध, ईसाई या इस्लाम हुआ कि नहीं।

धर्म सद्भाव का प्रतीक है। धर्म प्राणी मात्र के प्रति दया पैदा करता है। दूसरों के साथ वह व्यवहार कदापि न करें, जो हमें अपने लिए पसन्द नहीं। धर्म लड़ना-मरना नहीं सिखाता, वह तो जीना सिखाता है। धर्म मानव को जोड़ने के लिये है, तोड़ने के लिये नहीं। जबकि पन्थ एवं संप्रदाय मानव को तोड़ रहे हैं। मानव को मानव से विभाजित कर रहे हैं। भेदभाव की दीवार खड़ी कर रहे हैं। आजकल हम धर्म के नाम पर झगड़े हो रहे है। वास्तव में झगड़ा धर्म का नहीं हो रहा है, बल्कि यह तो पन्थों का हो रहा है। धर्म तो मानव मात्र को शांति कायम रखने का संदेश देता है। धर्म मन में प्रेम के बीज बोता है।

जीयो और जीने दो का दूसरा नाम है धर्म। आचार संहिता का पालन करके ही धर्म का सही निर्वाह किया जा सकता है। आचरण को ही धर्म माना जाना चाहिये। धर्म वाद-विवाद और तर्क का विषय नहीं है, बल्कि कर्त्तव्य और त्याग का पर्याय है। हमारा धर्म जीवन सापेक्ष होना चाहिये। भले ही हम अलग-अलग नाम के धर्मो में हम जी रहे हों, लेकिन इसके बावजूद हमें इस बात का सदैव बोध रहना चाहिये कि किसी भी तालाब के भीतर पानी आने के कई रास्ते होते है, लेकिन तलाब के भीतर आने पर अन्ततः सारा पानी एक हो जाता है। धर्म का नाम मनुष्य को खण्डित करना नहीं है, अपितु जाति, वर्ग, वर्ण, पन्थ के खण्ड-खण्ड में बटी हुई मानवता को जोड़ना है।

हमारी अनमोल धरोहर : आगम ग्रंथ

भारतीय जन जीवन को सच्चे अर्थों मं अनुप्रमाणित करने वाले दो आलोक पुंज है- एक प्रभाकर, दूसरे सुधाकर। प्रभाकर दिन को गतिशील बना देता है तो सुधाकर रात शांत, निरव सुहावनी बना देते है। दोनों एक दूसरे के प्रेरक और पूरक है, इन्हीं दो आलोक पूंजों की आभा से प्रतिभासित कृतियां हमारे आगम ग्रंथ है, जो हमें ज्ञान का प्रकाश और सत्य का आलोक प्रदान करते है। आगम ग्रंथों में प्रतिपादित विषय हमें धर्म सम्मत बनाने और जीवन जीने का मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। कर्म और धर्म के बीच समन्वय स्थापित करने के साथ आगम ग्रंथ सत्य और धर्म, भक्ति और मुक्ति, भोग और त्याग, अनुराग और विराग का दर्शन कराने के साथ देशकाल और व्यक्तित्व के बारे में वह ज्ञान देते हैं जो वास्तविक है। आगम ग्रंथ जैन जगत के अक्षयकोष है। जैनों की सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक भावना को मूलाधार प्रदान करने वाली अमर कृतियां ये हमारे आगम शास्त्र ही है।

आगम की मूलशक्ति ज्ञान है जिसके कई पहलु है, क्षेत्र है। यह ज्ञान कभी शब्द के रूप में प्रकट होता है कभी विचार के रूप में, कभी संचरण के रूप में हमारे साथ चलता है तो कभी आचरण के रूप में हमें चलना सिखाता है। कभी मौन धारण कर यह आगम ज्ञान हमारे मन को मुखरित करता है कभी मनन बनकर मन में चिंतन की भावना जागृत करता है। यह आगम ज्ञान कभी कर्म की भावना जगाता है तो कभी धर्म का रहस्य खोलता है और कभी मुक्ति का मार्ग दिखलाता है। संक्षेप में कहे तो आगम जिस अर्थ में ज्ञान का पीठ माना जाता है उस अर्थ में यह ज्ञान जगत का सर्वस्व है, सृष्टि का बीजाक्षर है। जैन जगत के साहित्य की यह सारस्वत अभिव्यंजना केवल हमारे पूर्व गणधरों के अक्षर बीज मात्र न होकर समस्त विषयों की जानकारी के अभीष्ट की प्राप्ति का आधार है।

आगम ग्रंथों में जीवन दर्शन से लेकर आत्मदर्शन की सुगंध और माधुर्य का सम्मिश्रण है। सत्य और सृष्टि के सत्वसार इन शास्त्रों में समाहित है। सत्य धर्म और सात्विकता के उपदेशों के साथ आगम हमें जीवन के उन समस्त विषयों से अवगत कराते है जो जीवन को सुन्दर बनाते है। अंधकार का आवरण हटाकर आत्मबोध कराने वाले आगम ग्रंथों की रचना जीने और जीने देने की सहज सात्विक भावना को हृदय में पैदा करती है। महान व्यक्तियों के लिये भी, उनके मंगलमय मार्ग में अवरोध उपस्थित करनेवाले राग और मोह से सचेत कराने वाले आगम ग्रंथ मानव जीवन का लक्ष्य-सार्वत्रिक सुख को दिलाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। मानव जाति का मंगल सूत्र 'शुभ के संसाधन में है इस परम सत्य की ओर आगम, मानव मात्र का ध्यान आकृषित करने वाली रचना ही नहीं बल्कि उसके उपदेश को ग्रहण कर मानव जीवन सफल करनेवाले गुरूमंत्र भी है।

आगम ग्रंथ हमेशा ही जैन जगत के जन मानस के श्रद्धा और विश्वास का आधार रहे है लेकिन आज ग्रंथ का अध्ययन करने वालों की संख्या कितनी बची है? आज आगम ग्रंथों, विषयों के वर्गीकरण के साथ उन पर शोध की भी व्यापक आवश्यकता है साथ ही आगम ग्रंथों के अनुवाद की ओर भी ध्यान दिया जाना जरूरी दिखाई दे रहा है। सिर्फ पवित्र ग्रंथ कहकर हम उन्हें अलमारी की शोभा बनाकर नहीं रख सकते हैं। यह प्रश्न भी विचारणीय है कि इस क्षेत्र में समर्पण भाव से कार्य करनेवाले- कितने लोग है? निश्चित रूप से परिस्थिति चिंताजनक है, कुछ किये जाने की दरकार है। आज धर्म के क्षेत्रों में जो पैसा खर्च किया जा रहा है उसका कुछ अंश आगम ग्रंथों पर खर्च किया जाना आवश्यक दिखाई दे रहा है। गुरू भगवंतों, श्रेष्ठीवर्यों और जैन विद्वानों से अपील करता है कि- सागरजी महाराज पर ओर उन पर समीक्षा, टिप्पणी पर आधारित पुस्तकों के लिये अलग से एक वृहत्त शोध ज्ञान भंडार की स्थापना की जाना चाहिये जिससे हम गर्व से कह सके कि सागरजी महाराज, आगम ग्रंथ हमारे गौरव और अभिमान को बढ़ाने वाले है इससे धरोहर की रक्षा और उसके विकास, शोध को मौका मिलेगा।

यह कितने आश्चर्य की बात है कि- आज इस देश में आगम शास्त्रों पर जो काम होना था वह नहीं हो पाया है, जबकि विदेशों में आज भी काम हो रहा है वह हमारे लिये गर्व और गौरव का विषय न होकर शर्मनाक बात है। इसलिये कि अब हमारी धरोहर में छिपे रहस्यों को जानने और उससे लाभ लेने का कार्य विदेशी कर रहे हैं। यह विवेचना इसलिये की है कि अब कुछ करने के लिये हमें आगे आना होगा। हमें जैन आगम ग्रंथों की साज संभाल रूपी साधना को अभीष्ट दिशा में प्रवर्तित करने में, अमूल्य योगदान देने के लिये आगे आना होगा।

ज्ञानवरणीय कर्म की निर्जरा के लिये और जैन जगत को विरासत में कुछ देने में यदि हमें तनिक भी आत्मा का आलोक मिला तो यही हमारा जीवन साफल्य होगा।

आगमों के संरक्षक-पूज्यपाद श्री आनन्दसागरसूरीजी महाराजा

इस संसार के उपवन में सैकड़ों पुष्प महकते है वे अपनी दिव्य मधुर सुवास से संपूर्ण वातावरण को सुवासित करते है फिर भी जो महत्व गुलाब का है वह अन्य किसी का नहीं है, गुलाब में एक अनूठी सौंदर्यता, माधुर्यता छुपी है और इन्हीं विशिष्ट गुणों के कारण गुलाब पुष्पों का बादशाह कहलाता है ठीक इसी प्रकार साधु संत तो अनेकों है सभी में अपनी विशिष्टता विद्यमान है किंतु जो बात पूज्य सागरानंद सूरीजी में है वह अन्य में नहीं है। पूज्य सागरानंद सूरीजी म.सा. का प्रत्येक क्षेत्र चाहे वह ज्ञान, ध्यान, तप, त्याग सब कुछ अद्भूत था। पूज्यश्री ने जिनशासन की अथाह सेवा की जिनशासन की सबसे कीमती धरोहर ''जैन आगम'' को उन्होंने नया जीवन प्रदान किया है। ऐसे महान मनीषी का जन्म के श्रावण वदी अमावस्या की मध्यरात्री में अज्ञानता के अंधकार को नाश करके ज्ञान का दैदिप्यमान प्रकाश फैलाने वाली दिव्य आत्मा ने श्रेष्ठीवर्य मगनभाई के यहां माता यमुनादेवी की रत्नकुक्षी से जन्म लिया। बालक का नाम हेमचन्द्र रखा। बचपन से ही धर्म की अगाढ़ रूची वाले इस मेघावी बालक को संयम से प्यार हो गया और संयम पथ पर चलने के लिये उनका मन उत्कंठित होने लगा। उन्होंने पूज्य झवेरसागरजी म.सा. के पास वि.सं.1947 माघ शुक्ला पंचमी के दिन संयम अंगीकार किया और उन्हें श्री आनंदसागरजी नाम प्रदत्त किया गया। पूज्य श्री झवेरसागरजी म.सा.के रूप में एक पारखी जौहरी ने श्री आनन्दसागरजी जैसे अमूल्य हीरे को परख मिला। ज्ञान सीखने की तीव्र आकांक्षा उनके मन में थी। वे समग्र जैन आगमों का विशद अध्ययन करना चाहते थे किंतु उस युग में आगमों की अप्राप्तता और आगमों की प्रतिलिपियों की अत्यन्त दयनीय दशा थी, आचार्यश्री के मन में अत्यन्त दुःख था कि जैन आगमों को सुरक्षित कैसे किया जाय? सर्वप्रथम तो पूज्यश्री ने मात्र एक माह में 45 आगमों का सर्वत्र ज्ञान अर्जित कर लिया फिर उन्होंने आगम की सुरक्षा के लिये सूरत तथा पालीताना में विशाल आगम मंदिरों का निर्माण करवाया और अनेक बार आगमों की वाचनाएं दी और आगमों को नवीन रूप में पुनः लिपिबद्ध किया और उनकी कई प्रतियां अनेक शहरों में सुरक्षित करवाई। उनका यह कहना था कि जैन आगम यानि तीर्थंकरों की वाणी का मूल रूप जो कि हमारी सबसे बड़ी पूंजी है, यदि वही अप्राप्य हो जाय तो जैन धर्म से मानो उसकी आत्मा चली जायेगी क्योंकि आगम (शास्त्र) ही धर्म का प्राण है, यहीं नहीं उन्होंने 222 ग्रंथों की रचना करने के साथ-साथ 163 ग्रंथों का संपादन संशोधन का कार्य किया। पूज्यश्री एक राष्ट्रभक्त संत थे, जब हमारा राष्ट्र आपत्तिकाल से गुजर रहा था, वि.सं. 1958 में जब गुजरात, राजस्थान में अकाल पड़ा था तब पूज्यश्री ने दुष्काल राहत कोष की स्थापना कर करोड़ों रूपये की राशि एकत्रित कर राष्ट्र सहायता के लिये अर्पित की थी। दूसरी ओर उन्होंने करीब 20 संस्थाओं की स्थापना की, ये संस्थाएं जैन धर्म के उत्थान के लिये एवं आर्य संस्कृति की रक्षा, देश प्रेम, राष्ट्रहित के कार्य सक्रिय रूप से कर रही है। सागरानंदसूरीजी ने हर क्षेत्र चाहे वह आध्यात्मिक हो, धार्मिक हो, साहित्यिक हो चाहे राष्ट्र उत्थान का कार्य हो, हर कार्य उन्होंने पूर्ण समर्पण के साथ किये। वर्तमान में जो आगम सुलभता से उपलब्ध हो रहे है वह सब पूज्य आचार्यश्री की ही देन है। उनके अनेक गुणों से प्रभावित होकर कई व्यक्तियों का जीवन परिवर्तित हुआ। गांधीजी उनके भक्त थे। यूरोप में जर्मनी आदि कई देशों के अनेक विद्वानों से उनकी चर्चा हुई। उनका श्रुत ज्ञान इतना श्रेष्ठ था कि उन्हें आगमों के एक-एक श्लोक पूर्ण रूपेण कंठस्थ याद थे, कहां किस पृष्ठ पर क्या लिखा वह तुरन्त बना देते थे। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन साहित्य साधना में लगा दिया। आगमोद्धारकश्री जैसे जो महामानव अपने जीवन के एक पल को भी व्यर्थ नहीं गंवाते है। वे हर घड़ी को हर क्षण को सार्थक बना देते हैं। अपनी मृत्यु को भी वे महोत्सव बना देते हैं। श्रीसागरानंद सूरीजी अपना अंत समय सन्निकट जानकर लगातार 15 दिन तक अर्द्ध पद्मासन में संथारे की अवस्था में रहे। उन्हें अपनी मृत्यु की घड़ी का पूर्वाभास हो गया था। कुछ समय के लिये आंखें खोली और सबसे क्षमायाचना कर अंत में इस महापुरूष ने अपनी महाप्राण यात्रा प्रारंभ कर दी। सचमुच वह एक दिव्य ज्योति के रूप में जन्में थे और ज्ञान का अलौकिक दिव्य प्रकाश फैलाकर पुनः दिव्य ज्योति में विलीन हो गये।

जैन जगत आगम एवं श्रीसागरजी महाराज

सम्पूर्ण जैन जगत के आगम ग्रंथों से विस्तार से परिचय कराने का कार्य हमारे पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज-पूज्य श्री सागरानंद सूरीश्वरजी महाराज ने किया था। आगम ग्रंथों

पर पूज्यश्री का जो अध्ययन था उसे जैन जगत के सभी साधु–समुदायों ने मान्यता प्रदान की है यह सागर समुदाय के लिये गौरव की बात है। पूज्यश्री के इस महत्वपूर्ण योगदान ने जैन मान्यताओं को स्थापित करने में अविस्मरणीय योगदान दिया है परन्तु पूज्य सागरजी महाराज के आगम ग्रंथों पर किये महत्वपूर्ण कार्यों के अवदान फ्लस्वरूप हम कुछ भी दे नहीं पाये हैं। यह कितने आश्चर्य की बात है कि आज सारे भारत वर्ष के जैन जगत में किसी भी समुदाय या पंथ का कोई भी आगम शोध केन्द्र नहीं है जहां आगम ग्रंथ में छिपे गूढ़ रहस्यों पर शोध कार्य किया जा सकें। सागर समुदाय, जैन जगत को आगम श्रुत मंदिर की स्थापना कर एक बहुत बड़ी भेंट दे सकता है।

आगम शोध सेन्टर

ज्ञान–चारित्र, व्यक्तित्व निर्माण की प्रयोगशाला है, जैन सिद्धांतों में सर्वाधिक महत्व ज्ञान पर ही किया गया है, ज्ञान के संदर्भ में जैन धर्म का इतिहास बहुत ही उज्जवल होने के साथ ज्ञान की एक समर्थ विरासत के हम मालिक है। हमारे आगम ग्रंथों में सैकड़ों हजारों वर्ष पूर्व गणधर भगवंतों ने जो लेखबद्ध किया है वह परमात्मा की वाणी आज भी पूर्ण रूप से स्थिर शाश्वत और अपरिवर्तनशील है। अन्य सभी बातों और जगत के कार्यों में परिवर्तन हो रहे है परन्तु आगम में बतलाये गये सब सिद्धांत, बातें आज भी वैसी की वैसी घटित होकर अनुभव की जा रही है।

आज सर्वाधिक आवश्यकता हमारे प्राचीन आगम ग्रंथों के सर्वधन सुरक्षा और पुर्न प्रकाशन की है। साथ ही आगम ग्रंथों में गहन ज्ञान को शोध द्वारा बाहर लाने की है। जैन जगत में आज तक इस कार्य पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया है। यही कारण है कि जैन समाज न तो स्वयं आगम ग्रंथों का सही उपयोग कर पाया है और नही हम जगत को आगम ग्रंथों की विशेषताओं उनके गूढ़ रहस्यों और विशिष्ट ज्ञान से अवगत करा पाये है। अब वक्त आ गया है कि हमें आगम ग्रंथों की हमारी समर्थ विरासत को बहुउपयोगी बनाने के लिये उद्त होना होगा।

कथ्यम्.....पूज्य सागरजी म.सा.

✲ जो स्वयं नियमों का पालन करता हो वो यदि किसी को नियम का उपदेश दे तो उसका उपदेश अवश्यमेव प्रभावी बनता है।

करोड़ों की कीमत का हीरा

अहमदाबाद में चार्तुमास सम्पन्न कर पूज्य पंन्यास प्रवर श्री आनंदसागरजी महाराज अपनी जन्म भूमि कपड़वंज पधारे यहां संत अपार उत्साह और उमंग के द्वारा भव्य अगवानी हुई लोगों के अतिउत्साह को देखकर पूज्यश्री ने कहाकि- आप मुझ पर इतनी प्रीति मत रखो, मेरी काया पर इतना राग मत करो, मैं वीर भगवान के सिद्धांतों का प्रचार कर रहा हूं, आपको वीर प्रभु के सिद्धांतों पर ही राग रखना है और जिससे बन सके उसे इस मार्ग को ग्रहण करना चाहिये, उस पर प्रीति करें, यह धर्म है। यहां से आपश्री का विहार सूरत की ओर हुआ। सूरत में प्रथम बार आपश्री का आगमन होने से अपूर्व सत्कार के साथ आपका सामैय्या निकाला गया। पूज्यश्री सागरजी महाराज की मुखमुद्रा शांत और ज्ञानप्रिय थी उस पर अनुपम तेज झलकता था, आपकी सुन्दर आँखों से जैसे जैनत्व का प्रकाश सूरत की स्वर्ण भूमि को प्रकाशवान कर रहा था। आपका आगमन प्रथम बार ही सूरत नगर में हुआ था पहली ही नजर में सूरत के रत्न पारखीयों ने पूज्यश्री को परख लिया था कि यह श्री आनंदसागर करोड़ की कीमत का हीरा है। बाद में तो सूरतवालों से पूज्य श्री सागरजी महाराज का इतना गहरा सम्बन्ध हो गया था कि ऐसा लगता था कि सागरजी महाराज को सूरत से जुदा करना-अलग करना ऐसा है जैसे आत्मा का शरीर से अलग होना है।

45- आगम के नाम

अंग–

1– आचार सूत्र, 2– सूतकृत सूत्र, 3– स्थान सूत्र, 4– समवाय सूत्र, 5– व्याख्यान प्रज्ञप्ति सूत्र, 6– ज्ञाताधर्मकथा सूत्र, 7– उपासक दशा सूत्र, 8– अंतकृद्दशा सूत्र, 9– अनुत्तरोपपातिकदशा सूत्र, 10– प्रश्नव्याकरण सूत्र तथा 11– विपाक सूत्र। व्याख्या प्रज्ञप्ति सूत्र अर्थात् श्री भागवती सूत्र।

12 उपांग–निम्न उपांग बारह है।

1– औपपातिक सूत्र, 2– राजप्रश्नीय सूत्र, 3– जीवा–जीवाभिगम सूत्र, 4– प्रज्ञापना सूत्र, 5– सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र, 6– चंद्रप्रज्ञप्ति सूत्र, 7– जम्बुद्वीपप्रज्ञप्ति सूत्र, 8– निरयावली–कल्पिका सूत्र, 9– कल्पावतंसिका सूत्र, 10– पुष्पिका सूत्र, 11– पुष्पचूलिका सूत्र तथा 12– वृष्णिदशा सूत्र।

10 पइन्ना (प्रकीर्णक)–

1– चतुःशरण प्रकीर्णक, 2– आतुरप्रत्याख्यान प्रकीर्णक, 3– महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक, 4– भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक, 5– तुदुलवैचारिक प्रकीर्णक, 6– गणिविद्या प्रकीर्णक, 7– चन्द्रावेध्यक प्रकीर्णक, 8–देवेन्द्रस्तव प्रकीर्णक, 9– मरणसमाधि प्रकीर्णक तथा 10– संस्तारक प्रकीर्णक।

6 छेद सूत्र–

1– दशाश्रुतस्कन्ध सूत्र, 2– बृहत् कल्पसूत्र, 3– व्यवहार सूत्र, 4– निशीथ सूत्र, 5– महानिशीथ सूत्र और 5– महानिशीथ सूत्र। इन पांच छेद सूत्र उपरान्त 6– छट्ठा छेद सूत्र पंच कल्प अनुपलब्ध होने से जीतकल्प सूत्र का निर्देश किया है।

4– मूल सूत्र–

1– उत्तराध्ययन, 2– दशवैकलिक, 3– आवश्यक तथा 4– ओघनिर्युक्ति।

2– चूलिका–

दो चूलिका सूत्र– 1– नन्दी सूत्र, और 2– अनुयोग द्वार सूत्र।

एक अद्भुत छःरिपालित संघ

विक्रम संवत 1976 में सूरत के प्रसिद्ध श्रेष्ठ श्री जीवणचंद्र नवलचंद्र जवेरीजी द्वारा पूज्यपाद जीवंत आगम ज्ञानकोष के सागर पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराज की पवित्र पावन निश्रा में श्री सिद्धाचल महातीर्थ पालीताणा का संघ निकाला था। इस संघ के बाद आप पूज्यश्री का मंगल चातुर्मास सिद्धगिरी में ही हुआ। उस समय याने आज से लगभग 81 वर्ष पूर्व इस चातुर्मास में दो लाख रुपये से अधिक का खर्च हुआ था। इस संघ में 700 श्रावक श्राविका और साधु-साध्वीजी थे। सूरत में महावद 8 को संघ ने प्रस्थान किया था, जिसने चैत्य वद 2 के दिन श्री सिद्धाचल की पावन रज को स्पर्श किया था।

सागरजी महाराज अर्थात् जंगम पुस्तकालय

जैन धर्म विशाल एवं महान है...!

अनेकविध देशों के विद्वानों ने जैन धर्म का अध्ययन करने का सदैव प्रयास किया है।

बात उन दिनों की है जब जर्मनी से डॉ. क्राउन उर्फ सुभद्रादेवी का भारत आगमन हुआ था। जैन धर्म का अध्ययन करना उसका प्रमुख उद्देश्य था। आचार्यश्री धर्मसूरीजी म.अपने शिष्यों के साथ बम्बई में विचरण कर रहे थे। जर्मनी की विदुषी क्राऊन आचार्यश्री के दर्शनार्थ प्रायः सविशेष जाती थी और अपनी शंकाओं का सदैव समाधान करती रहती थी। उसका अध्ययन-मनन चल रहा था। अध्ययन करते करते एक दिन उसके मन में शंका की सूक्ष्म लहर लहराई कि जैन धर्म तो पूर्ण अहिंसा का उपदेशक है। तो फिर जैन मंदिरों में विशेषतया मुख्य गर्भगृह के द्वार पर दोनों तरफ हिंसक सिंह की आकृतियाँ क्यों रहती है?

उसने अपनी शंका का निराकरण करने हेतु तत्कालीन विद्वानों.... आचार्यो से सम्पर्क किया। परन्तु उसकी शंका का समाधान कहीं से नहीं हो पाया था। समय यूं ही गुजर रहा था। डॉ. क्राऊन का अध्ययन जारी था। परन्तु शंका का क्रीड़ा प्रायः छुलबुलाता रहता था। ऐसे में किसी ने कहा-'आप पूज्य आचार्य देवश्री सागरानन्द सूरीजी म.सा.के पास क्यों नहीं जाती? वहां आपकी हर शंका का समाधान-निराकरण हो जायेगा।'

डॉ.क्राऊन ने पूज्यसागरजी महाराज का पता लगाया। पूज्य सागरजी महाराज अहमदाबाद दोसीवाड़ा की पोल में उन दिनों विराजमान थे। लगभग विक्रम संवत् १९८७ की साल होगी।

डॉ. क्राऊन अहमदाबाद आई। पूज्य सागरजी म. को वन्दन कर विनय भाव से उसने अपनी शंका प्रस्तुत की।

'गुरूदेव...! सम्पूर्ण अहिंसक देव के मंदिर में दोनों ओर मुंह फैलाये हिंसक सिंह की आकृतियाँ क्यों होती है?'

तत्क्षण उत्तर देते हुए सागरजी महाराज ने कहा-'वे राग-द्वेष की सूचक आकृतियाँ है। संसार में राग और द्वेष ही प्राणीमात्र को अपने फौलादी पंजे में फंसाकर भटकने के लिये विवश करते है। जिनेश्वर देव ने राग और द्वेष पर विजय प्राप्त कर उन्हें अपना गुलाम बनाया है। उसी का वे प्रतीक है।

डॉ.क्राऊन आनंद से झूम उठी। उसके मन का समाधान.... निराकरण हो गया था। तभी उसने दूसरा प्रश्न उपस्थित किया-

लेकिन इसका आधार ग्रन्थ कौन सा है गुरूदेव...?

'उपमिति भव प्रपंचा...!' पूज्य सागरजी महाराज ने उत्तर देते हुए कहा- 'सिद्धर्षि गणि ने लिखा है- 'राग द्वेषों सिंह व्याघ्रौ', राग और द्वेष सिंह व्याघ्र है।'

फिर तो डॉ. क्राऊन ने अनेक प्रश्न किये,जिसके उत्तर पूज्य सागरजी महाराज देते गये और प्रत्येक उत्तर के साथ संबंधित आधार ग्रंथ बताते गये। फलतः डॉ. क्राऊन के मुंह से सहसा शब्द प्रस्फुटित हो गये। **'पूज्य सागरजी महाराज तो जंगम पुस्तकालय है।'**

मगनभाई का दीक्षा प्रेम

हेमचंदभाई (पू.सागरजी म.सा.) का वैराग्य के प्रति प्रेम मातुश्री यमुनादेवी को अच्छा नहीं लगता था उनके इस प्रकार के वैराग्य प्रेम से वे असंतुष्ट रहती थी। श्री मगनलाल भाई (पिताश्री)को हेमचंद्रभाई की वैराग्य के प्रति रूचि परिवार में सिर्फ उन्हें ही नहीं थी बल्कि पिताश्री मगनभाई को भी यह रूचि थी श्री मगनभाई हमेशा दीक्षा लेने का विचार रखते थे परन्तु वे चाहते थे कि पहले दोनों पुत्र श्री हेमचंद्रभाई एवं मणिभाई दोनों दीक्षा लेवें। इसके बाद वो भी दीक्षित हो जाये। पिताश्री मगनभाई जानते थे कि मेरा दायित्व फर्ज सिर्फ इतना नहीं है कि मैं पुत्रों का लालन पालन कर उन्हें संसार में ऐसा ही छोड़ दूं, मेरा तो सही फर्ज यह है कि मैं बच्चों का शाश्वत कल्याण करूं। इसलिये मैं चाहता हूं कि मेरे दोनों ही पुत्र ही भगवती दीक्षा करें। मैं मगनभाई यह भी समझते थे कि अगर मैं पहले दीक्षा ले लेता है तो फिर दोनों बच्चों को दीक्षा मार्ग पर आगे ले जाने के लिये कौन मार्गदर्शन-प्रेरणा देगी। ऐसा होने पर वे संसार सागर में ही अटक जायेंगे।

श्रमण संस्कृति के दिव्यपुंज परम पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री

श्रमण संस्कृति के दिव्यपुंज परम पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री का अवतरण इस धारा पर जैन शासन की गरिमा और गौरव को चहुंगति प्रदान करनेवाला सिद्ध हुआ है। विश्व कल्याणकारी जैन शासन आपश्री जैसी साहित्यलोक प्रतिमा पाकर धन्य बन गया है क्योंकि आपश्री के द्वारा आगम ग्रंथों के लिये किया गया और दिया गया योगदान युगों-युगों तक जैन शासन की ध्वजा का जगत लहराता रहेगा।

जगत की आवश्यकता के अनुसार गौरवशाली चरित्र के संतों का जन्म होता आया है, वे सभी उस आध्यात्मिक प्रकाश की ओर ईशारा करते है जो सृष्टि के प्रत्येक मानव के जीवन का उत्थान करता है पर आगमोद्धारकश्री ने तो मानव का ही नहीं जैन जगत का उत्थान करने का कार्य किया है। जिनागम के आदित्य से पूज्यपादश्री ने जैन जगत को आलोकित कर दिया है।

एक ऐसा तेजोमय व्यक्तित्व जिनकी वाणी ओर कलम से ज्ञानगंगा प्रवाहित होती रही है। आपश्री के नाम स्मरण मात्र से हृदय मंदिर में परमात्म प्रीति की ऋचाएं गुंजने लगती है। पूज्य आगमोद्धारकश्रीजी का जीवन संयम और साधना की रोशनी बिखेरता पूर्णिमा के चंद्रमां सा शीतल और शांत था किंतु पूज्यश्री के अमावस्या के दिन भी जन्म लेकर जिन शासन के गंगन मंडप में एक ऐसे जाज्वल्यमान सितारे के रूप में अमर ख्याति पाई है कि आज भी सागरजी महाराज के आगम अवदान को जैन जगत भूल नहीं पाया है और न भूल पायेगा।

अनेक कठिन परिस्थितियों से मुकाबला करते हुए लोगों और साधुओं के द्वारा पूज्यश्री की ख्याति और बढ़ते गौरव के कारण स्वार्थ से लिप्त होकर जो षड़यंत्र रचे गये थे उन सब का जवाब आपश्री ने जिनशासन की हित कामना से किये गये कार्यों और सच्चाई के बल पर निष्फल कर दिये थे। वे अडिग मेरूपर्वत के समान अपने कार्यों से षड़यंत्रकारी असंतुष्टों को करार जवाब देते आये थे। देश धर्म जाति और समुदाय से ऊपर उठकर पू.आगमोद्धारकश्री ने आगमग्रंथों के उत्थान का जो कार्य किया है वह अनुकरणीय अनुगमनीय एवं अतुलनीय है इसी कारण आज आगमोद्धारकश्री समुचे जैन जगत में जिनशासन के प्रकाश स्तम्भ बन गये है। आगमोद्धारकश्री पू.गुरू गौतम गणधर की उस श्रमण संस्कृति के जयवंता प्रतीक है जिनमें जीवन में तीर्थों की पवित्रता, सिद्धों की सिद्धता और गुरूत्व का गौरव झलकता है।

सागर समुदाय के सरसंघ सरताज पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा चरम तीर्थंकरपति भगवान महावीर स्वामीजी की श्रमण पाट परम्परा के ऐसे संत है जिन्होंने कभी भी समाज को पूजापाठ एवं परम्परा के नाम से विघटित नहीं किया है बल्कि आपश्री के आगम अध्ययन के आगे जैन जगत के सारे संत समुदाय नत्मस्तक होते थे परम्परा तिथि आदि का निर्णय उस समय सागरजी की वाणी ही करती थी पू.आचार्य नेमिसूरीजी म.सा.हो या पू.आचार्य वल्लभ सूरीश्वरजी म.सा.हो या पूज्य पुण्यविजयजी म.सा. आदि श्रमणवृंद शासन की कोई भी संकट प्रधान स्थिति में निर्णय लेने के लिये,उसके समाधान के लिये पूज्य सागरजी महाराज से ही सलाह लेते थे ओर सागरजी महाराज जो समाधान प्रस्तुत करते थे उस पर ही अमल करते थे। सारे जैन जगत का श्रमण समुदाय सागरजी महाराज के उस तर्क सम्मत धर्मविधि सम्मत समाधान का सम्मान करते हुए उस पर चलते थे। यह सागरजी महाराज सम्मान के अभिलाषी नही थे बल्कि शासन के हिताभिलाषी थे।

पूज्यपाद आगमोद्धारकश्रीजी ने श्रावक की उच्चकोटि की जीवनचर्या से श्रमण संघ के कठोर साधना पथ को अंगीकार कर संयम जीवन पर्यन्त दिन में मात्र एक बार भोजन (एकासणा) का कठोरता से पालन करते हुए तपस्या एवं संयम की उच्च पराकाष्ठा का निर्वाहित करते हुए निस्प्रही योगी सागरजी महाराज ने अपने ज्ञान,ध्यान,मनन चिंतन,साहित्य सृजन सब कुछ को लोकहित में समर्पित करते हुए अपनी अंतिम सांस को भी शासन को समर्पित कर दिया। सागरजी महाराज एक ऐसे महानायक थे जिनके जीवन का हर कर्म, प्रभु पूजा को समर्पित था। संस्कृति, साहित्य, मानवता का मेरूदण्ड है। इस बात को सागरजी ने चरितार्थ करने के लिये अपने जीवन का लक्ष्य जैन आगम ग्रंथों की प्राचीनता और अप्राप्त खंडों को ढूंढने और शोध को बनाया। वे इस बात को जानते थे कि आगम ग्रंथों के इतिहास को ज्ञातकर जैन संस्कृति के समृद्धिशाली एवं गौरवमय अतीत को उजागर किया जा सकता है।

आगम के बारे में विभिन्न संतों की परस्पर विरोधी मान्यताओं और मतभेदों को दूर करने के लिये आपने संपूर्ण भारत को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर हजारों की संख्या में आगम ग्रंथों को खोज निकाला। एक बार कोई श्लोक या पंक्ति स्मृति कोष में पहुंच गई फिर तो उसका संदर्भ,ग्रंथ का नाम, पृष्ठ क्रमांक चाहे जब बताने की सक्षमता उनके मस्तिष्क में थी उन्होंने अपनी मेघा शक्ति के बल पर अधूरे श्लोक को पूरा कर दिखाया था। ताड़ पत्रों पर लिखे गये आगम ग्रंथों को खोज निकाल कर उनको आरस से लेकर धातु की पट्टिकाओं पर अंकित करवाकर उनको अमरता प्रदान कर जैन संस्कृति को जीवनदान दिया। सागरजी महाराज ने शास्त्रों में परमात्मा की अनुभूति की थी, ज्ञान को प्रभु भक्ति का आधार बनाया था। इसलिये तो उन्होंने आगम ग्रंथों को सुरक्षित रखने के लिये स्थान-स्थान पर आगम मंदिर का निर्माण करवाया। जो आज भी उनकी उपस्थिति का आभास कराते हैं।

प्लास्टिक : प्रदूषण-मुक्त भारत का संकल्प

''भारत के विकास से अपना नाता जोड़े, पॉलिथीन के प्रयोग को अब छोड़े।''

✻ ललित गर्ग, दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश को स्वच्छ भारत मिशन के तहत प्लास्टिक कचरे से मुक्त करने की अपील करते हुए एक महाभियान का श्रीगणेश गांधी जयंती के अवसर पर करने का संकल्प व्यक्त किया है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे सारा सिंगल यूज प्लास्टिक इक्ट्ठा करें एवं नगर निगम के पास या स्वच्छता कर्मचारी के पास सारा प्लास्टिक जमा कराएं और देश को सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्त करने में सहयोग दें। प्रकृति को पस्त करने, मानव जीवन एवं जीव-जंतुओं के लिये जानलेवा साबित होने के कारण समूची दुनिया बढ़ते प्लास्टिक के उपयोग एवं उसके कचरे से चिन्तित है। देखने में आ रहा है कि कथित आधुनिक समाज एवं विकास का प्रारुप अपने को कालजयी मानने की सफलता पाले हुए है और उसकी भारी कीमत भी चुका रहा है। लगातार पांव पसार रही तबाही इंसानी गफलत को उजागर तो करती रही है, लेकिन समाधान का कोई रास्ता प्रस्तुत नहीं कर पाई। ऐसे में अगर मोदी सरकार ने कुछ ठानी है तो उसका स्वागत होना ही चाहिये। क्या कुछ छोटे, खुद कर सकने योग्य कदम नहीं उठाये जा सकते।

प्लास्टिक के कारण देश ही नहीं दुनिया में विभिन्न तरह की समस्याएं पैदा हो रही है। इसके सीधे खतरे दो तरह के हैं। एक तो प्लास्टिक में ऐसे बहुत से रसायन होते हैं, जो कैंसर का कारण माने जाते हैं। इसके अलावा शरीर में ऐसी चीज जा रही है, जिसे हजम करने के लिए हमारा शरीर बना ही नहीं है, यह भी कई तरह से सेहत की जटिलताएं पैदा कर रहा है। इसलिए आम लोगों को ही इससे मुक्ति का अभियान छेड़ना होगा, जागृति लानी होगी।

प्लास्टिक हमारे शरीर और पर्यावरण को कितना नुकसान पहुंचा सकता है, इसे हम पिछली सदी का अंत होते-होते अच्छी तरह समझ चुके थे। लेकिन यह भी सच है कि इतने साल बीत जाने के बावजूद न तो हम इसका विकल्प खोज सके और न ही इसका इस्तेमाल बढ़ने की दर ही थाम सके। पिछली सदी में जब प्लास्टिक के विभिन्न रुपों का अविष्कार हुआ, तो उसे विज्ञान और मानव सभ्यता की बहुत बड़ी उपलब्धि माना गया था, अब जब हम न तो इसका विकल्प तलाश पा रहे है और न इसका उपयोग ही रोक पा रहे हैं, तो क्यों न इसे विज्ञान और मानव सभ्यता की सबसे बड़ी असफलता मान लिया जाए ?

वैज्ञानिकों ने पाया है कि प्लास्टिक हम सबके शरीर में किसी न किसी के रुप में पहुंच रहा है। कैसे पहुंच रहा है, इसे जानने के लिये हमें पिछले दिनों अमेरिका के कोलोराडो में हुए एक अध्ययन के नतीजों को समझना होगा। अमेरिका के जियोलाजिकल सर्वे ने यहां बारिश के पानी के नमूने जमा किये। ये नमूने सीधे आसमान से गिरे पानी के थे, बारिश की वजह से सड़कों या खेतों में बह रहे पानी के नहीं। जब इस पानी का विश्लेषण हुआ, तो पता चला कि लगभग 90 फीसदी नमूनों में प्लास्टिक के बारीक कण या रेशे थे, जिन्हें माइक्रो प्लास्टिक कहा जाता है। ये इतने सूक्ष्म होते हैं कि हम इन्हें आँखों से देख पाते।

पूरी दूनिया के लिये सिरदर्द बन चुके जल और वायु प्रदूषण से बचने के लिए विश्वभर में नए-नए उपाय किये जा रहे हैं। जबकि प्लास्टिक प्रदूषण की उससे भी ज्यादा खतरनाक एवं जानलेवा स्थिति है, यह एक ऐसी समस्या बनकर उभर रही है, जिससे निपटना अब भी दुनिया के ज्यादातर देशों के लिए एक बड़ी चुनौती है। कुछ समय पहले एक खबर ऐसी भी आई थी कि एक चिड़ियाघर के दरियाई घोड़ का निधन हुआ, तो उसका पोस्टमार्टम करना पड़ा जिसमें उसके पेट से भारी मात्रा में प्लास्टिक की थैलियां मिली, जो शायद उसने भोजन के साथ ही निगल ली थी। लेकिन अगर आप सोचते हैं कि प्लास्टिक सिर्फ हमारे आस-पास रहने वाले अबोध जानवरों के पेट में ही पहुंच रहा है, तो आप गलत हैं। हाल में हुए एक शोध के अनुसार एक वर्ष में एक वयस्क इंसान 52 हजार से ज्यादा प्लास्टिक के माइक्रो कण खाने-पानी और सांस के जरिये निगल रहा है। अध्ययन में पता चला था कि लगभग सभी ब्रांडेड बोतल बंद पानी में भी प्लास्टिक के ये सूक्ष्म कण मौजूद हैं। कनाडाई वैज्ञानिक द्वारा माइक्रो प्लास्टिक कणों पर किये गए विश्लेषण में चौंकानेवाले नतीजे मिले हैं। विश्लेषण में पता चला है कि एक वयस्क पुरुष प्रतिवर्ष लगभग 52000 माइक्रो प्लास्टिक कण केवल पानी और भोजन के साथ निगल रहा है। इसमें अगर वायु प्रदूषण को भी मिला दें तो हर साल करीब 1,21,000 माइक्रो प्लास्टिक कण खाने-पानी और सांस के जरिए एक वयस्क पुरुष के

शरीर में जा रहे हैं। माइक्रो प्लास्टिक हमारे वातावरण का एक हिस्सा बन चुके है। प्लास्टिक की बहुलता एवं निर्भरता के कारण मौत हमारे सामने मंडरा रही है। हम चाहकर भी प्लास्टिक मुक्त जीवन की कल्पना नहीं कर पा रहे हैं, क्योंकि माइक्रो प्लास्टिक हवा में है, पानी में है, नदी में है, समुद में है, बारिश में है, और इन सबके चलते वे हमारे भोजन में भी हैं, हम मनुष्यों के भी, पशुओं के भी और शायद सभी प्राणियों के जीवन में भी है। आप चाहे मांसाहारी हों या शाकाहारी हों, पर इसके साथ ही आप प्लास्टिकहारी भी बन चुके हैं। आप व्रत या रोजा रख सकते हैं, लेकिन इस दौरान भी आप हवा में तैरते माइक्रो प्लास्टिक को सांस के साथ शरीर में घुसने से नहीं रोक सकते।

भारत में अगर प्लास्टिक प्रदूषण की बात करें तो यहां यह समस्या और भी विकराल है। यहां प्लास्टिक कचरे का निस्तारण तो दूर, इसके सही से संग्रहण और रखरखाव की व्यवस्था भी नहीं है। आलम यह है कि भारत में सड़क से लेकर नाली, सीवर और घरों के आसपास प्लास्टिक कचरा हर जगह नजर आता है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार देश में प्रतिदिन लगभग 26 हजार टन प्लास्टिक कचरा निकलता है। भारत में हर साल प्रति व्यक्ति प्लास्टिक का प्रयोग औसतन 11 किलो है, जबकि अमेरिका में एक व्यक्तिद्वारा प्लास्टिक प्रयोग का सालाना औसत 109 किलो का है। हर साल उत्पादित होनेवाले कुल प्लास्टिक में से महज 20 0 फीसद ही रिसाइकिल हो पाता है। 39 फीसदी जमीन के अंदर दबाकर नष्ट किया जाता है और 15 फीसदी जला दिया जाता है। प्लास्टिक के जलने से उत्सर्जित होने वाली कार्बन डायऑक्साइड की मात्रा 2030 तक तीन गुनी हो जाएगी, जिससे हृदय रोग के मामले में तेजी से वृद्धि होने की आशंका है।

उत्तरप्रदेश, बिहार, दिल्ली, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना, हिमाचल प्रदेश समेत लगभग सभी राज्यों ने सिंगल युज प्लास्टिक पर रोक लगाई है लेकिन आपको ये जानकर हैरान होगी कि देश में प्लास्टिक की प्रति व्यक्ति सालाना खपत पिछले 5 सालों में दोगुनी से ज्यादा हो गई है। देश में इसकी मैन्युफैक्चरिंग और इंपोर्ट भी बढ़ रही है। इंटरनेशनल ट्रेड सेंटर के आंकड़ों के मुताबिक देश के प्लास्टिक इंपोर्ट में 2017 के मुकाबले 2018 में 16 फीसदी की तेजी आई है और ये 15 विलियन डॉलर को पार कर गया है। अमेजन एवं फिलीपकार्ट जैसे आनलाइन व्यवसायी प्रतिदिन 7 हजार किलो प्लास्टिक पैकेजिंग बैग का उपयोग करते हैं। सरकारों के पास किसी भी नियम या अभियान को अमल में लाने के लिये सारे संसाधन उपलब्ध है, इन कम्पनियों को भी प्लास्टिक मुक्त भारत के घेरे में लेने के लिये कठोर कदम उठाने चाहिये। तभी देश को सिंगल यूज प्लास्टिक एक बार प्रयोग होने वाली प्लास्टिक से मुक्त बना पाएगी। व्यापारियों और दुकानदारों को देश को प्लास्टिक मुक्त करने में अपना पूरा योगदान देना होगा। उनके विशेष सहयोग की आवश्यकता है और बिना उसके आगे आए देश को इस मुसीबत से मुक्त नहीं किया जा सकता। दुकानदार कई तरह के बोर्ड लगाते हैं। जब वह एक बोर्ड लगाएं कि हमसे प्लास्टिक बैग की इच्छा न करें। जानकारों का कहना है कि सरकार को प्लास्टिक बैन करने के साथ-साथ इसके वैकल्पिक उपायों की खोज करनी होगी। प्रधानमंत्री मोदी की अपील इसे जन-जन का अभियान तो बना सकती है लेकिन रिसर्च पर खर्च बढ़ाना और प्लास्टिक से सस्ते विकल्प ढूंढना बड़ी चुनौती होगी।

शासन-समाचार

श्री गोटीवाला ओसवाल संघ पूना में पू. पं.प्रवर श्री विरागसागरजी म.सा. का चार्तुमास

पूना- पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य भगवंत श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा की आज्ञा से श्री शत्रुंजय सेवक श्री क्रांतिकारी संत पूज्य पंन्यास श्री विरागसागरजी म.सा. मुनिश्री हेमेन्द्रसागरजी म.सा.आदि-2 का चार्तुमास श्री नाकोड़ा भैरव मंदिर शुक्रवार पेठ, पूना (महा.) में हो रहा है साथ ही पूज्य योगनिष्ठ आचार्य श्री केशरसूरी समुदाय की साध्वीवर्या श्री श्रेयांसप्रभाश्रीजी, साध्वी श्री स्नेहप्रभा श्रीजी म.सा.का चार्तुमास श्री ओसवाल मंदिर उपाश्रय, शुक्रवार पेठ, पूना (महा.) में हो रहा है। चार्तुमास प्रवेश 2 जुलाई को हुआ।

साध्वी दिव्ययशा श्रीजी का चार्तुमास बैंगलोर में

बैंगलोर- श्री चन्द्राप्रभ स्वामी जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ नंबर-2 ऑसबनरोड़, लावण्य टॉकीज के पीछे बैंगलोर-560002 (कर्ना.) में पूज्य साध्वीवर्या श्री निर्मलयशा श्रीजी, सुशिष्या साध्वीवर्या श्री दिव्ययशाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री दिव्यदर्शा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास 29 जून को हुआ।

✻ अनु दीपक जैन, जयपुर, मो.नं. 9782499999

आगमोद्धारक भविष्य फल जुलाई-2020

मेष– व्यापरिक यात्रा हेतु लाभकारी, पारिवारिक कलह में वृद्धि संभावित, शरीर के बांए हिस्से में चोंट का खतरा।

वृष– संचित धन में कमी, सरकारी विभाग से सतर्कता रखना आवश्यक, नए व्यापार संबंधी योजना को टालना बेहतर, आंख संबंधी समस्या संभावित।

मिथुन– व्यापार में बाधा संभावित, अप्रत्याशित लाभ के प्रबल योग, दाम्पत्य जीवन में तनाव संभावित, दांत संबंधित रोग की संभावना।

कर्क– व्यापारिक लाभ हेतु बेहतर एवं कार्य क्षेत्र में नई संभावनाएं, स्वास्थ्य संबंधी सतर्कता आवश्यक, संतान से विवाद की स्थिति।

सिंह- व्यापरिक धन एवं लाभ में बाधा एवं सांझेदारों से विवाद, दाम्पत्य सुख में कमी।

कन्या– कार्य विस्तार हेतु नई योजना टालना बेहतर, पिता के स्वास्थ्य हेतु चिंता की स्थिति, रुके धन की प्राप्ति संभावित।

तुला– व्यापार की दृष्टि से बेहतर समय, रक्त दोष की संभावना, यात्रा टालना हितकर, संतान सुख रहेगा।

वृश्चिक– व्यापार में बाधा, न्यायालय संबंधी विवाद में मजबूती, पारिवारिक जायदाद से लाभ, शरीर के दाहिने भाग में चोंट का भय।

धनु– व्यापार में अप्रत्याशित धन लाभ, वैवाहिक जीवन एवं छोटे भाई बहन से तनाव संभावित, हड्डी संबंधी रोग से परेशान।

मकर– व्यापारिक विवाद में विजय, रक्त संबंधी रोग से परेशानी, पारिवारिक वातावरण बेहतर।

कुम्भ- व्यापार में बेहतर प्रगति, त्वचा संबंधी रोग से परेशानी, संतान पक्ष की तरफ से चिंता।

मीन– व्यापारिक कार्यो में हानि संभावित, परिवार में तनाव एवं झगड़े की स्थिति, हृदय संबंधी रोग से सतर्क रहें।

स्वप्न में गोदर्शन का फल:- *स्वप्न में गौ अथवा सॉड़ के दर्शन से कल्याण-लाभ एवं व्याधि-नाश होता है। इसी प्रकार स्वप्न में गौ के थन को चूसना भी श्रेष्ठ माना गया है। स्वप्न में गौ का घर में ब्याना, बैल अथवा सॉड़ की सवारी करना, तालाब के बीच में घृत-मिश्रित खीर का भोजन भी उत्तम माना गया है। इनमें से घी सहित खीर का भोजन तो राज्य-प्राप्ति का सूचक माना गया है। इसी प्रकार स्वप्न में ताजे दुहे हुए फेन सहित दुग्ध का पान करनेवाले को अनेक भोगों की तथा दही के देखने से प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। जो बैल अथवा साँड से युक्त रथ पर स्वप्न में अकेला सवार होता है और उसी अवस्था में जाग जाता है, उसे शीघ्र धन मिलता है। स्वप्न में दही मिलने से तथा दही खाने से यश की प्राप्ति निश्चित है। इसी प्रकार यात्रा आरम्भ करते समय दही और दूध का दिखना शुभ शकुन माना गया है। स्वप्न में दही-भातका भोजन करने से कार्य सिद्धि होती है तथा बैल पर चढ़ने से द्रव्य-लाभ होता है एवं व्याधि से छुटकारा मिलता है। इसी प्रकार स्वप्न में सॉड़ अथवा गौ का दर्शन करने से कुटुम्ब की वृद्धि होती है। स्वप्न में सभी काली वस्तुओं का दर्शन निन्द्य माना गया है,*

✻ पं.श्री राजेश्वरजी शास्त्री सिद्धांतजी

वर्ग पहेली क्रमांक-303

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	2	3		■	4		5	
	■	6		7		■		■
8	9		■	10		■	11	12
■	13			■	14	15		
16	■		■	■	■		■	
17	18		19	■	20		21	■
22		■	23	24	■	25		26
■		■	27		28		■	
29				■	30			

बाएं से दाएं:-

1- प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव के पिता---- (4)

4- गुजरात का यह शहर पहले कर्णावती के नाम से प्रसिद्ध था- अह---- (4)

6- जीरावला और मंडार तीर्थ के निकट भगवान महावीर स्वामी का एक तीर्थ---- (4)

8- नमक का पर्याय---- (3)

10-महाराजा सवाई प्रतापसिंह का बनवाया हवामहल इस शहर में हैः ज----र (2)

11-महामंत्र के पहले दो अक्षर----(2)

13-जिनकी माता पृथ्वी है उन तीर्थंकर का नाम--(3)

14-सप्ताह के इस दिन सभी स्कूलों में छुट्टी रहती है----(4)

17-सम्प्रति राजा द्वारा प्रतिष्ठित भगवान आदिनाथ का मंदिर धार जिले के इस शहर में है----र (4)

20-14 वें तीर्थंकर की माता का नाम ----(3)

22-सिखों के गुरु नानकदेवजी का जन्म स्थान पाकिस्तान में यहां है----काना साहिब (2)

23-मंदिर में प्रभुजी के समक्ष भावपूर्वक बोलते है--(2)

25-भ.महावीर पर तेजोलोश्या छोड़ने वाले गोशालक के पिता का नाम ---- (3)

27-श्री करेड़ा पार्श्वनाथतीर्थ इस शहर में हैः भू--र (2,2)

29-अकबर के नौ सलाहकारों में से एक महेशदास का प्रचलित नामः----(4)

30-ताड़ के सूखे पत्तों पर लिखी पांडुलिपियां कहलाती हैः ---- (4)

वर्ग पहेली क्रमांक-302 का परिणाम

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

प	द्म	ना	थ	■	अ	ति	वी	र
र	■	न	व	ग	ति	■	रा	■
म	प्र	■	भ	■	थि	ला	न	ग
■	भो	पा	व	र	■	ल	■	हुं
म	■	न	■	त	■	घा	■	ली
ग	■	स	■	न	का	टी	का	■
धा	न	र	थ	■	र्ति	■	म	द
■	व्द	■	का	र	क	ल	■	स
खा	न	दा	न	■	■	व	ग्रे	वे

ऊपर से नीचे:-

1- नारियल का मालवी बोली में उच्चारण---(3)

2- अलवर में है 23 वें तीर्थंकर का यह मंदिर---थे (3,3)

3- सहस्त्र का पर्यायवाची शब्द हैः---र (2)

4- शंखेश्वर और पाटण के निकट भ.चंद्रप्रभु का तीर्थ:ज---(4)

5- सिरोही जिले में सम्प्रति राजा का बनवाया जीवित महावीर स्वामी का मंदिर यहां है---इ (4)

7- ''जब मैं था तब गुरु नहीं, अब गुरु है हम नाय। प्रेम गली अति सांकरी, जा में दो न स---'' (2)

9- भारतीय संसद के प्रवेश कक्ष में अंकित हैः ''---धैव कुटुम्बकम्'' (2)

12-बचपन में हम सभी ने यह गीत सुना है- नानी तेरी--- को मोर ले गए, बाकी जो बचा था काले चोर ले गए (3)

15-छठी सदी का तीर्थ है पावन---म् नाम धराय, चंद्रप्रभु का सुंदर मंदिर, अब यह अमनेश्वर कहलाय (3,3) (तमिलनाडु स्थित)

16-उपन्यास सम्राट प्रेमचंद का प्रसिद्ध उपन्यास- (3)

18-पल्लविया पार्श्वनाथ का तीर्थ-पहला--- (4)

19-विश्व प्रसिद्ध देलवाड़ा का मंदिर बनवाने वाले दो भाईयों में से एक--- (4)

21-वृक्ष का वह भाग जिस पर फूल पत्तियां लगती है (2)

24-खाद्यान्न या कृषि उपज जिनसे तेल निकाला जाता है---हन की श्रेणी में आता है (2)

26-पटना का एक प्राचीन नाम-पाट---(3)

28-तपस्या करनेवालों की अनुमोदना करते हुए सभी उनकी---- पूछते हैं (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-303

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

जोड़िए वकिता को पहचानिये:-

1- मैंने अपने भाई को मृग समझकर उसका वध किया।

2- यहां मेरे माता तो जन्म होते ही उस पर भूमि में रखवा दिया।

3- मेरी माता जो मुझे जिंदा जलाने के लिये लाक्षागृह बनाया था।

4- मैंने मेरे गुरुदेव की याद में पालीताना नगर बसाया था।

5- अलग हुए दो दिलों को जोड़नेवाला मैं सेल्युशन हूं।

6- मेरी माता ने मुझे सोने के लिए बेच दिया।

7- मैं मेरी मॉ के कहने पर मामा के पास दृष्टिवाद सूत्र पढ़ने गया।

8- मैंने भाई पर मुष्ठी उठाई और उसी मूली से लोच कर दिया।

9- मैंने हाथी के पॉव तले कवि गंग को कुचलवाया था।

10-बड़े भाई की गैरहाजरी में मैंने अनारावत भाव से राज्य किया।

✻ सब प्रकार की क्रिया का, योग का, जप का, तप का और इसके सिवाय अन्य प्रकार का ऐसा लक्ष्य रखना कि यह सब आत्मा को छुड़ाने के लिए है न कि बांधने के लिए।

आगमोद्धारक सदस्यता शुल्क ऑन लाईन भेजिये....

आगमोद्धारक का सदस्यता शुल्क आप ऑन लाईन बैंक में जमा कर सकते है। शुल्क भेजने के लिये बैंक- आय.सी.आय.सी.आय. बैंक, शाखा तीन बत्ती चौराहा, उज्जैन (म.प्र.)
खाता:-श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)
खाता क्रं. 030001000331
IFSC Code ICICI0000300

-सूचना-

जुन 2020 की आगमोद्धारक पत्रिका पाठकों को उपलब्ध वाट्सअप नंबर पर भेजी गई थी इसलिये वर्गपहेली और ज्ञानगंगोत्री के उत्तर हमें प्राप्त नहीं होने से किसी को भी पुरस्कार नहीं दिया गया है।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-302 के परिणाम

सही उत्तर-

1-दर्पण:- केशर, भंडार, दीपक, घंट, दर्पण, कलश, छत्र।

2- ज्ञान:- ठहवणी, दस्तरी, डायरी।

3- चारित्र:- झोली, तरपणी, घड़ा, संथारा, पायकेसरि, सुपड़ी।

✻ सत्पुरुषों का महान बोध है कि उदय मे आये हुए कर्मो को भोगते हुए नये कर्मो का बन्धन न हो इसके लिये आत्मा को सचेत रखना।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-7-2020 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमश:51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम "आगमोद्धारक' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

साध्वीवर्या श्री गिरांशुश्रीजी ने गणरत्न संवत्सर तपकर प्रभुवीर के शासन में तप इतिहास रचा

* 480 दिन के तप में 408 उपवास और 72 बिसासणा के साथ 14 जून को पारणा

अहमदाबाद- पूज्य साध्वीवर्या श्री गिरांश्द्रश्रीजी म.सा. ने गुणरत्न संवतार तप को पूर्ण कर जैन जगत में तप का एक नया इतिहास रच दिया। आपके इस तप की अनुमोदना के लिये सब शब्द छोटे है। 480 दिन की महान तपस्या में आपने 408 उपवास एवं 72 बियासणा किया। 14 जून को जोटाणा की चाली में आपश्री की तप अनुमोदनार्थ शोभायात्रा आयोजित हुई। लाकडाउन के बाद अनुमोदना में अनेक धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही अनुमोदना।

साध्वीवर्या पूर्णयशाश्रीजी का चार्तुमास रतलाम

रतलाम-परम पूज्य साध्वीवर्या श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा.के गुरुकुल से पूज्य साध्वीवर्या श्री पूर्णयशाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा-10, कलिकुड़ पार्श्वनाथ उद्धारक आचार्य श्री राजेन्द्र सूरीजी म.सा. समुदाय से साध्वीश्री राजगुणाश्रीजी आदि ठाणा-4 सागर समुदाय से साध्वीश्री सुचितप्रज्ञा श्रीजी आदि ठाणा-4 एवं साध्वी श्री मोक्ष श्रीजी म.सा. का चार्तुमास श्री देवसूर तपागच्छ चारथुई श्री संघ गुजराती उपाश्रय-चौमुखीपुल, रतलाम (म.प्र.) में हो रहा है।

आचार्य श्री मुक्तिसागर सूरीजी आदि ठाणा का प्रवेश 1 जुलाई को हुआ

उज्जैन- पूज्यपाद पंन्यास श्री अभ्युदयसागरजी म.सा. के सुशिष्य मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्ति सागरसूरीजी, पू.पंन्यास श्री अचलमुक्ति सागरजी, मुनिश्री पावन सागरजी, मुनिश्री मनमुक्तिसागरजी म.सा.आदि ठाणा एवं साध्वी भगवंत पूज्य श्री प्रियदर्शना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश 1 जुलाई को श्री हीर विजय सूरी बड़ा उपाश्रय, खाराकुआ, उज्जैन में हुआ।

गीतांजली-बोरिवली में प्रवेश हुआ

मुंबई- श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ गीतांजली बौरीवली-मुंबई में सरस्वती पुत्र आचार्य भगवंत श्री रत्नसुन्दरसूरीश्वरजी महाराजा का 11 जून को मंगलमय चातुमार्सिक प्रवेश हुआ।

आचार्यश्री का विहार बैंगलोर की ओर

बैंगलोर- सागर समुदाय के आचार्य भगवंत श्री नयचंद्रसागरसूरीजी महाराजा मुनिश्री अजितचंद्रसागरजी म.सा. का विहार बैंगलोर की ओर हुआ था जहां आपका चार्तुमास होने जा रहा है।

पूज्य गच्छाधिपतिश्री का चार्तुमास निम्बाहेड़ा में

निम्बाहेड़ा-पूज्यपाद राष्ट्रसंत आचार्य देवेश श्री जयंतसेनसूरीजी महाराजा के पट्टधर सुशिष्य त्रि स्तुतिक समुदाय के वर्तमान गच्छा धिपति आचार्य देवेश श्री नित्यसेन सूरीजी महाराजा आदि ठाणा का चार्तुमास राजेन्द्र सूरी ज्ञान मंदिर आदर्श कालोनी निम्बाहेड़ा (राज.) 312601में होने जा रहा है। आपका चातुमार्सिक प्रवेश 24 जून को हुआ।

वागड़ विभूषण आ. श्री मृदुरत्नसागर सूरीजी का चातुमार्सिक प्रवेश 28 जुन को बदनावर में हुआ

राजगढ़- पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव भूषण गुरुदेव भोपावर तीर्थो द्धारक श्री नवरत्नसागरसूरीजी म. सा. के शिष्य पूज्यपाद जैनाचार्य श्री मृदुरत्न सागरसूरीजी म.सा. मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजीम.सा. अर्हम्रत्नसागरजी सा. आदि ठाणा का **चार्तुमास प्रवेश** श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ पौषधशाला **बदनावर में 28 जुन को हुआ।** 22 जुन को आपकी महामांगलिक कानवन में हुई

श्री मुक्तिदर्शनाश्रीजी का चार्तुमास नागदा में

भोपावर- यहां 24 फरवरी को युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. की महामांगलिक में नागदा श्री संघ की विनंती पर साध्वीवर्या श्री मुक्ति दर्शनाश्रीजी का आगामी चार्तुमास नागदा श्रीसंघ में करने की घोषणा की गई।

गणिवर्यश्री का चार्तुमास प्रवेश हुआ

भोपाल- श्री आदिनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर अरोरा कालोनी भोपाल में आचार्य भगवंत श्री मृदुरत्नसागर सूरीजी महाराज के सुशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी म.सा.की महा मांगलिक 22 जुन को बी एचई एल पिपलानी में हुई आपके स ाथ आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश 28 जून श्री आदिनाथ श्री संध अरेरा कालोनी भोपाल में हुआ।

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

चार्तुमास पर्व : युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी का चातुर्मास जबुद्वीप परिसर पालीताना में

- ✻ महामारी के कारण सभी मर्यादा का पालन किया गया।
- ✻ विगत अप्रेल माह से आप पालीताना में विराजित रहे है।
- ✻ 22 जून को भावनगर में महामांगलिक हुई।
- ✻ पूज्यश्री का चार्तुमास श्री जम्बुद्वीप संकुल में हो रहा है।
- ✻ आपका चार्तुमास पालीताना में 28 जून को प्रवेश हुआ।

पालीताना-पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराजा के द्वितीय शिष्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म. सा., उपाध्याय श्री वैराग्य रत्नसागरजी मुनिश्रीकीर्तिरत्न सागरजी ,मुनिश्री तीर्थरत्नसागरजी, मुनिश्री उत्तमरत्न सागरजी म.सा. आदि ठाणा अप्रेल से पालीताना और अहमदाबाद में विराजित रहे अब पालीताना ओर भावनगर में चातुर्मास हेतु क्रियाशील है 22 जून की महामांगलिक का आयोजन भावनगर में दादा साहेब जैन मंदिर में रखा गया। यहां से विहार कर आपश्री पुनः पालीताना पधारे, यहां आपका मंगलमय चातुमार्सिक मंगल प्रवेश श्री जम्बुदीप परिसर में 28 जून को हुआ। पूर्व में आपश्री का चार्तुमास श्री नाकोड़ा महातीर्थ में होना था किंतु कोरोना महामारी के कारण सभी धार्मिक कार्यक्रम स्थगित होने से चार्तुमास पालीताना हो रहा है। चार्तुमास के बाद आगे की परिस्थिति के अनुसार धार्मिक आयोजन की योजना बनेगी।

श्री भोपावर प्रतिष्ठाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी का चार्तुमास उज्जैन में

उज्जैन- सागर समुदाय के वचन सिध्द वरिष्ठ जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी म.सा. मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा.आदि ठाणा का 28 वर्ष उपरांत मालवा आगमन हुआ आपश्री भोपावर महातीर्थ की प्रतिष्ठा के बाद निरंतर मालवा के विभिन्न धर्म क्षेत्रों श्री संघों में शासन प्रभावक कार्य सम्पन्न कराते हुवे आपकी स्थिरता देपालपुर में थी यहां पूज्यपाद वचनसिद्ध आचार्य भगवंत श्री नरदेवसागरसूरीजी म.सा. के सुशिष्य मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. को श्री वर्धमान तपस्वी 90 ओली का पारणा देपालपुर में 10 जून को हुआ। इस अवसर पर 108 आयंबिल हुए। तप की महिमा पर व्याख्यान भी हुए। आपश्री ने उज्जैन में चार्तुमास के लिये 24 जून को विहार किया। श्री ऋषभदेव छगनी राम पेढ़ी पर **आपका चार्तुमास** होने जा रहा है **प्रवेश 1 जुलाई को हुआ।**

जैनाचार्य श्री अशोकसागरसूरीजी का चातुर्मास मांडवगढ़

मांडव- श्री जैन श्वेतांबर तीर्थ पेढ़ी मांडवगढ़ में पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री अशोकसागरसूरीजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की पावन निश्रा में यहां जिनालय के जीर्णोद्धार एवं धर्मशाला का उद्घाटन प्रसंग सम्पन्न हुआ। इस के बाद लकडाउन होजाने से आपश्री यही विराजमान थे।

उन्हेल में चार्तुमास

उन्हेल- सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री कुसुमश्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री राजरत्नश्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ श्री संघ में हो रहा है।

बेटमा में चार्तुमास

बेटमा-सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री सौम्यवंदनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ बेटमा (धार) (म.प्र.) में होने जा रहा है।

जैनाचार्य श्री रविदेव सूरीजी का चातुर्मास श्रुततीर्थ में

पालीताना- पूज्यपाद आचार्य देवेश गच्छाधिपति श्री अभयदेव सूरीजी महाराजा की आज्ञा से पूज्यपाद आचार्यदेव श्री रविदेवसूरीजी महाराज आदि साधु-साध्वीवृंद का चार्तुमास श्रुततीर्थ-अर्ह्म प्रभावक चैरिटेबल ट्रस्ट, पालीताना (भावनगर) गुज. में हो रहा है। आपश्री का चातुमार्सिक प्रवेश 28 जून को हुआ।

पू. जैनाचार्य श्री अपूर्वमंगलरत्नसागर सूरीजी गुरुकुल का चातुर्मास शंखेश्वर में

मुंबई- पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठआचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्न सागरसूरीजी म. सा.के शिष्य परिवार मुनिश्री आगम रत्नसागरजी म.सा., मुनिश्री प्रशमरत्न सागरजी म.सा. पू.आ.भगवंत वाणी के जादूगर श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.के सुशिष्य मुनिश्री वज्ररत्न सागर जी म. सा.आदि साधु-साध्वी ने उदयपुर शंखेश्वर महातीर्थ की ओर विहार किया जहां आपका आगामी चार्तुमास होने जा रहा है।प्रवेश 24 जून को हुआ

ज्योतिर्विद आचार्य भगवंत का चार्तुमास श्री भक्तामर महातीर्थ अभ्युदयधाम में

धार- ज्योतिर्विद आचार्यदेव श्री जिनरत्नसागरसूरीजी म.सा.वाणी के जादूगर आचार्य देवेश श्री जितरत्न सागरसूरीजी एवं आयंबिल आराधक आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी म. सा.आदि मुनिश्री चैत्ररत्नसागरजी, मुनिश्री जिग्नेशरत्न सागरजी, मुनिश्री गोयमरत्नसागरजी म.सा.आदि साधु-साध्वी भगवंत ठाणा का मंगलमय चार्तुमास श्री अभ्युदय भक्तामरधाम महातीर्थ धार में होगा। पूर्व में आपश्री का चार्तुमास नागपुर में होना था।

अनुयोगाचार्यश्री का चार्तुमास मातमोर में

उज्जैन- 26 फरवरी को यहां आयोजित पूज्य अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी का चार्तुमास श्री मणिभद्र महातीथ त्रिभानु पार्श्वनाथ तीर्थ मातमोर शिवपुर में हो रहा है।

श्री वेपेरी संघ में चार्तुमास

चैन्नई- श्री वेपेरी श्वेतांबर मूर्ति पूजक जैन संघ में आगामी वर्ष 2020 के वर्षावास के लिये संघ हित चिंतक परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय तीर्थभद्रसूरीश्वरजी म.सा.का चार्तुमास वेपेरी श्री संघ में होगा। श्री जैन श्वेतांबर नाकोड़ा पार्श्व नाथ तीर्थ मेवानगर के अध्यक्ष सुप्रसिद्ध उद्योगपति , समाज गौरव, शासनरत्न संघवी श्री रमेश कुमार मुथा ने गुरु भगवंत से कहा कि- वेपेरी के जिन मंदिर की प्रतिष्ठा उनके गुरु आचार्यदेव श्रीमद् विजय कलापूर्ण सूरीजी म.सा. द्वारा हुई और जिनालय का रजत जयंति महोत्सव आपश्री की निश्रा में ऐतिहासिक रुप से मनाने की हमारी हार्दिक भावना है।

मंडार में चार्तुमास

मंडप- पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री अभयदेवसूरीजी एवं आचार्यश्री मोक्षरत्नसूरीजी म.सा.का आगामी चार्तुमास मंडार श्री संघ में होगा। चार्तुमास श्री महावीर स्वामी देरासर कंकुतारा आराधना भवन मंडार जिला सिरोही (राज.) में होगा।

प्रतापगढ़ में चार्तुमास

प्रतापगढ़- पूज्य साध्वी भगवंत श्री संस्कारनिधि श्रीजी एवं साध्वी श्री जिनांगनिधि श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री गुमानजी का जैन श्वेतांबर मंदिर निचला बाजार में हो रहा है। आपका चातुर्मास प्रवेश 2 जुलाई को हुआ।

भावनगर में चार्तुमास

भावनगर- श्री दादा साहेब जैन मंदिर, भावनगर (गुज.) में पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य उपाध्याय प्रवर श्री वैराग्यरत्नसागरजी म.सा., मुनिश्री कीर्तिरत्नसागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास हो रहा है। प्रवेश 2 जुलाई को हुआ।

मोहनखेड़ा में चार्तुमास

मोहनखेड़ा- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री ऋषभचंद सूरीश्वरजी म.सा. आदि साधु-साध्वीजी का चार्तुमास श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन ट्रस्ट मंडल के अंतर्गत श्री मोहनखेड़ा तीर्थ में हो रहा है।

पादलिप्तपुरम् में चार्तुमास

पालीताना-श्री आदिश्वर जिनालय पादलिप्तपुरम्-पालीताना में पूज्य आचार्य देवेश श्री चन्द्रशेखर सागर सूरीश्वरजी म.सा.अपने सुशिष्य मुनिश्री दिव्यशेखरसागरजी म.सा. एवं मुनिश्री विश्वशेखरसागरजी म.सा. आदि ठाणा-3 का चार्तुमास हो रहा है।

सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति जिनागम सेवी आचार्य देवेश दौलतसागरसूरीजी महाराजा के सौवें जन्म दिन पर सम्पूर्ण जैन जगत में अनुमोदना धार्मिक आयोजन की श्रृखला बनी

- ✻ देशभर में नमो आपरियांणं पद के साथ जन्म तपोत्सव के आयोजन।
- ✻ पूज्यश्री सूरत में चार्तुमास हेतु विराजित है।
- ✻ 8 जून से 13 सितंबर तक महोत्सव की श्रृंखला।
- ✻ 20 मई से भी आराधना के आयोजन।
- ✻ अनेक क्षेत्रों में 100 दिवसीय अनुमोदना।
- ✻ देशभर के श्री संघों आदर के साथ आनंद छाया।

अहमदाबाद- सुविशाल सागर समुदाय के वर्तमान गच्छाधिपति जिनागम सेवी आचार्य देवेश श्री दौलतसागर श्री दौलतसागर सूरीजी महाराजा अपने जीवन के 100 वर्ष पूर्ण करने जा रहे है। पूज्यश्री जैतपुर नामक गाँव जो मेहसाणा गुजरात के समीप है, वहां के एक पाटीदार समाज से है, आपश्री ने जेतपुर में भव्य जिन मंदिर का निर्माण करवाया है जहां नियमित 40-50 अजैन सेवा पूजा आरती के लिये आते हैं। आपश्री की एक अद्भूत अविस्मरणीय देन जैन जगत को है जो पूना के कात्रज में आगम मंदिर के नाम से विख्यात है, पूर्व में पूज्यश्री का चार्तुमास और 100 वर्ष की वय पूर्ण कर लेने पर एक अविस्मरणीय आयोजन पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. के मार्गदर्शन और प्रेरणा से पूना में होना था किंतु कोराना महामारी से अब आपश्री चार्तुमास हेतु सूरत में ही विराजित है यहां आपश्री का प्रवेश 24 जून को हुआ। पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री अजातशत्रु श्री नंदीवर्धनसागरसूरीजी, पूज्यपाद आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी महाराजा आदि साधु-साध्वीवृंद के साथ श्री घोड़रोड़ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ सरेलावाड़ी सूरत-395007 (गुज.) में आपका चार्तुमास हो रहा है। आपश्री के100 वर्ष पूर्ण कर लेने पर सारे जैन जगत में 100 दिवस तक जन्म तपधर्म महोत्सव के आयोजन हो रहे है। पूज्यपाद जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागरसूरीजी म.सा. की प्रेरणा से नमो आयरियांणं पद के एकासणा के साथ 2 करोड़ मंत्रों का जाप भी चल रहा है। यह कार्यक्रम 13 सितंबर 2020 तक चलेगा। सूरत में होनेवाले जन्मोत्सव के आयोजन की रुपरेखा अभी आने वाली है। पूज्यश्री के जन्म महोत्सव के अंतर्गत 100 दिन तक भारतभर के जैन श्रीसंघों में अष्टप्रकार की पूजन, स्नात्र पूजन, नवकारसी, जीवदया, अनुकम्पा दान, एकासणा, आयंबिल चारित्र पद की आराधना जैसे अनेक धार्मिक आयोजन हो रहे है। पूज्यश्री को धर्म आधारित इस समर्पण महोत्सव में हजारों हजार श्रावक-श्राविका भाग ले रहे है। यहीं नहीं सागर समुदाय के साधु-साध्वी भगवंत भी चारित्र धर्म की मर्यादा के अनुकूल आराधना में संलग्न है।

नीमच में चार्तुमास

नीमच-पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के तृतीय सुशिष्य आचार्य भगवंत श्री मृदुरत्नसागर सूरीश्वरजी के सुशिष्य मुनिश्री नमिरत्न सागरजी म.सा. एवं मुनिश्री पवित्ररत्न सागरजी म.सा. का चार्तुमास नीमच के श्री भीड़ भंजन पार्श्वनाथ जैन मंदिर के जैन भवन में हो रहा है। आपका चार्तुमार्सिक प्रवेश 24 जून 2020 को हुआ।

सिरोही में चार्तुमास

सिरोही- राजस्थान के सिरोही 307511 स्थित श्री पंच महाजन श्री संघ एवं श्री पार्श्वनाथ जैन ट्रस्ट के अंतर्गत पूज्य आचार्य भगवंत श्री रविरत्नसूरीश्वरजी म.सा., पंन्यास प्रवर श्री वैराग्यरत्नविजयजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास हो रहा है। आपका चार्तुमार्सिक प्रवेश 29 जून को हुआ।

श्री जीरावला महातीर्थ में चार्तुमास

जीरावला- श्री जीरावला पार्श्वनाथ महातीर्थ के रुप में विख्यात जैन तीर्थ में पूज्य आचार्य भगवंत श्री रत्नाकर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास हो रहा है। आपश्री का तीर्थ में चार्तुमास हेतु मंगल प्रवेश 30 जून को हुआ।

चार्तुमास- 2020 : महत्वपूर्ण आराधना दिवस

✻	आषाढ़ सुद-14	शनिवार	4-7-2020	चौमासी चवदस- चार्तुमास आरंभ
✻	श्रावण वद-1	सोमवार	6-7-2020	श्री सीमंधर स्वामी आदि 20 विहारमान प्रभु का च्यवन कल्याणक
✻	श्रावण वद-3	बुधवार	8-7-2020	डेढ़ महिने का घर
✻	श्रावण वद-30	सोमवार	20-7-2020	पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा (श्री सागरानंदसूरीजी महाराजा) का 146 वां जन्म दिवस
✻	श्रावण सुद-3	गुरुवार	23-7-2020	श्री सीमंधर स्वामी आदि 20 विहारमान प्रभु का निर्वाण कल्याणक
✻	श्रावण सुद-4	शुक्रवार	25-7-2020	श्री नेमिनाथ प्रभु का जन्मकल्याणक, मासक्षमण आरंभ दिन
✻	श्रावण सुद-5	शनिवार	26-7-2020	श्री नेमिनाथ प्रभु का दीक्षा कल्याणक
✻	भादवा वदी-11	शनिवार	15-8-2020	अट्ठाई घर महापर्व पर्युषण आरंभ दिन
✻	भादवा वदी-30	बुधवार	19-8-2020	श्री महावीर स्वामीप्रभु जन्मवाचन दिवस
✻	भादवा सुदी-2	गुरुवार	20-8-2020	तेलाघर गणघर वाद
✻	भादवा सुदी-4	शनिवार	22-8-2020	संवत्सरी महापर्व बरसा सूत्र वाचन- संवत्सरी महाप्रतिक्रमण
✻	भादवा सुदी-11	शनिवार	29-8-2020	पूज्यपाद जगतगुरु श्री विजय हीरसूरीश्वरजी महाराजा की 424 वीं स्वर्गतिथि (विक्रम संवत् 1652)
✻	आसोज निज-5	बुधवार	21-10-2020	अधिष्ठायक देव श्री मणिभद्रवीर का स्मृति दिवस
✻	आसोज निज-7	शुक्रवार	23-10-2020	शाश्वती आसोज मास नवपद आयंबिल ओली प्रारंभ
✻	कार्तिक वदी-13	शुक्रवार	13-11-2020	धनतेरस
✻	कार्तिक वदी-14	शनिवार	14-11-2020	काली चवदस
✻	कार्तिक वदी-30	रविवार	15-11-2020	दीपावली : श्री महावीरस्वामी निर्वाण कल्याणक
✻	कार्तिक सुद-2	सोमवार	16-11-2020	नववर्ष आरंभ, श्री गुरु गौतमस्वामीजी केवलज्ञान (वि.सं.2077), वीर निर्वाण संवत् 2547 आरंभ भाईदूज
✻	कार्तिक सुद-5	गुरुवार	19-11-2020	ज्ञान पंचमी
✻	कार्तिक सुद-11	बुधवार	25-11-2020	मालवोद्धारक पूज्यपाद आचार्यदेवेश श्रीचन्द्रसागर सूरीजी महाराजा का जन्म दिवस
✻	कार्तिक सुद-14	रविवार	29-11-2020	चौमासी चवदस
✻	कार्तिक सुद-15	सोमवार	30-11-2020	श्री सिद्धाचल महातीर्थ की यात्रा आरंभ, कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य का जन्म दिन चार्तुमास पूर्ण

संवत-2076 सन 2020-गच्छाधिपतिश्री के चार्तुमास

नं.	गच्छाधिपति का नाम	चार्तुमास स्थल	मोबाईल नं
1-	प.पू.तपागच्छाधिपति आ.भ.श्री मनोहरकीर्तिसागर सूरीश्वरजी म.सा.	आयोजन नगर-अहमदाबाद	9016650938
2-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री विजय हेमचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.	पालड़ी-अहमदाबाद	9727078784
3-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री विजय कल्पजय सूरीश्वरजी म.सा.	अमदाबाद	9825053861
4-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री विजय अभयदेव सूरीश्वरजी म.सा.	गुरुराम पावनभूमि-सूरत	9737042432
5-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री विजय हेमप्रभ सूरीश्वरजी म.सा.	सेक्टर-22-गांधीनगर	6354102004
6-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री विजय अशोकरत्न सूरीश्वरजी म.सा. C/o प.पू.आ.भ.श्री विजय राजयशसूरीश्वरजी म.सा.	बेंगलोर मुलुन्ड-मुंबई	9825166337
7-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.	बोरीवली-मुंबई	9321139093
8-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री दोलतसागर सूरीश्वरजी म.सा.	सरेलावाड़ी-सूरत	9370504141
9-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री विजय यशोविजय सूरीश्वरजी म.सा.	पाल-सूरत	9427048255
10-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री विजय नित्यादंन सूरीश्वरजी म.सा.	जेतपुरा, जि.पाली-राजस्थान	9469666669
11-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री प्रद्युम्नविमल सूरीश्वरजी म.सा.	हिंमतविहार-पालीताणा	9324922222
12-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री विजय राजशेखर सूरीश्वरजी म.सा.	उपनगर-महेसाणा	9427837038
13-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री विजय धर्मधुरंधर सूरीश्वरजी म.सा.	पावागढ़-वडोदरा	7738933182
14-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री विजय कलाप्रभ सूरीश्वरजी म.सा.	गांधीधाम-कच्छ	9825019554

नं.	गच्छाधिपति का नाम	चार्तुमास स्थल	मोबाईल नं
15-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री विजय चंद्रसेन सूरीश्वरजी म.सा. C/o प.पू.आ.भ.श्री राजरत्न सूरीश्वरजी म.सा.	चेम्बर-मुंबई मुंबई	9821422090
16-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री मुनि मुक्तिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा.	चैन्नई	6399979999
17-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री विजय रविशेखर सूरीश्वरजी म.सा.	गोळ-जि.जालोर-राजस्थान	7795111111
18-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री विजय विज्ञानप्रभ सूरीश्वरजी म.सा.	घाटकोपर-मुंबई	9867931348
19-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री विजय सोमसुंदर सूरीश्वरजी म.सा. (बे तिथि)	अणस्थु तीर्थ-करजण	9904580196
20-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री विजय पुण्यपाल सूरीश्वरजी म.सा. (बे तिथि)	चंदावरकर लेन, बोरीवली-मुंबई	9825627435
21-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री विजय हेमेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. (बे तिथि)	सोलापुर-महाराष्ट्र	9890635664
22-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री विजय ऋषभचंद्र सूरीश्वरजी म.सा. (त्रिस्तुतिक)	मोहनखेड़ा (म.प्र.)	9826666117
23-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. (त्रिस्तुतिक)	निम्बाहेड़ा- राजस्थान	9429305068
24-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री विजय जयानंद सूरीश्वरजी म.सा. (त्रिस्तुतिक)	भीनमाल, जि.जालोर-राजस्थान	9784208384
25-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री गुणोदयसागर सूरीश्वरजी म.सा. (अचलगच्छ)	72, जिनालय, मांडवी-कच्छ	8879699561
26-	प.पू. उपाध्याय श्री भुवनचंद विजय म.सा. (पार्श्वचंद्रगच्छ)	जेसलमेर-राजस्थान	9925874366
27-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री जिनमणिप्रभसागर सूरीश्वरजी म.सा. (खारतरगच्छ)	मांडवला, जि.जालोर-राजस्थान	9825105823
28-	प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री युगभुषण सूरीश्वरजी म.सा. (पंडित म.सा.)	डोंबीवली-महाराष्ट्र	9323946262

पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा

एक जीवन परिचय

* डॉ. सुभाष जैन

आपने बचपन से ही अपने पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री देवेन्द्रसागरसूरीजी महाराज का साथ ग्रहण कर लिया था। 14 वर्ष की बालवय में आपने संयम ग्रहण कर लिया तब से लगातार आपकी अमृत निश्रा में जिनशासन के अनेक प्रभावी महोत्सव का आयोजन हो रहा है। पूज्यश्री की निश्रा में 17 उपधान तप प्रतिष्ठा, 45 अंजनशलाका, 8 अनेक दीक्षा प्रसंग का आयोजन हो गया है। बड़ी दीक्षा- आचार्य पद प्रदान-उपाश्रय उद्‌घाटन, गोड़ी पार्श्वनाथ जिनालय-पूना का जीर्णोद्धार, अनेक गांव-शहरों के मंदिरजी का जीर्णोद्धार, मेहसाणा जिला गुजरात में अनेक जीर्णोद्धार शताब्दी महोत्सव के आयोजन हुए है। बलोल गडस में अंजन-प्रतिष्ठा कर गांव उद्धार कर दिया। शिरपुर में शताब्दी महोत्सव, प्रतिष्ठा वर्षीतपाराधना आदि कार्यक्रम करवाये।

कतार गांव सूरत में जैन संघ की स्थापना पूज्यश्री की निश्रा में 36 वर्ष पूर्व हुई। उस समय वहां 40 परिवार ही थे, संघ स्थापना के बाद यहां अनेक छोटे-बड़े अनुष्ठान का आयोजन हुआ। चार्तुमास, उपधान हुए, अनेक स्थानों पर पूज्यश्री के हस्ते 16 वर्ष से वर्षीतपाराधना चल रही है। कत्तार गांव में भी प्रतिवर्ष वर्षीतप की आराधना चल रही है।

जन्म	:-	विक्रम संवत् 1998, चैत्रवद-11, शनिवार
दिनांक	:-	14/4/1942
स्थान	:-	वाव (बनासकांठा)
नाम	:-	सेवंतीभाई
पिता	:-	भूदरभाई
माता	:-	मणी बहन
दीक्षा	:-	संवत् 2012, वैशाख सुद-3, रविवार दिनांक 13/4/1956
स्थान	:-	पालीताना
मुनिनाम	:-	नरदेवसागरजी
बड़ी दीक्षा	:-	विक्रम संवत्-2013, कार्तिक वद-1, शनिवार, दिनांक 24/11/1956
स्थान	:-	साबरमती-अहमदाबाद
गणी पद	:-	विक्रम संवत् 2036, कार्तिक सुद-5, शुक्रवार, दिनांक 26/10/1979
पंन्यास पद	:-	विक्रम संवत् 2039, कार्तिक सुद-3, रविवार,दिनांक 15/5/1983
स्थान	:-	श्री शंखेश्वर तीर्थ-गुजरात
उपाध्याय पद	:-	विक्रम संवत्- 2047, वैशाख सुद-10, गुरुवार, दिनांक 23/4/1991
स्थान	:-	गुरुवार पेठ, पूना
आचार्य पदवी	:-	विक्रम संवत् 2049, वैशाख सुद-6, बुधवार, दिनांक 18/4/1993
स्थान	:-	पालीताना वाव धर्मशाला
विहार क्षेत्र	:-	महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, गुजरात, म.प्र., बिहार, बंगाल, उड़ीसा, राजस्थान आदि क्षेत्रों में

चार्तुमास.... चार्तुमास....

मुंबई के चार्तुमास

✻ श्री मंडेश्वर श्वे.मूर्ति पूजक संघ बोरिवली में प्रशांत मूर्ति पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री राजेन्द्र सूरीजी महाराजा, पूज्य आचार्य श्री धर्मयशसूरीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश 7 जून को हुआ।

✻ श्री घाटकोपर जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक तपागच्छ संघ नवरोज लेन-घाटकोपर (वेस्ट) में चंद्रधर्मचक्र तप प्रभावक पूज्य आचार्य श्री जगवल्लभ सूरीजी म.सा., आचार्य श्री हर्षवल्लभ सूरीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश 1 जून को हुआ।

✻ साध्वीवर्या श्री अर्पितगुणा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास जैन दादावाड़ी सांरगेट, पूना (महा.) में हो रहा है।

✻ पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. के सुशिष्य मुनिप्रवर श्री विरक्तसागरजी म.सा. का चार्तुमास पायधुनी, मुंबई (महा.) के श्री महावीर स्वामी जिनालय में हो रहा है।

✻ पूज्य आचार्य श्री आनंदवर्धन सूरीजी म.सा., पूज्य आचार्य श्री आत्मदर्शनसूरीजी म.सा. आदि ठाणा-5 का चार्तुमास श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर 52 जिनालय देवचंद्रनगर भायंदर (वेस्ट) मुंबई (महा.) में हो रहा है। प्रवेश 17 जून को हुआ।

अहमदाबाद के चार्तुमास

✻ खरतर गच्छीय श्री मोहनलाल जी महाराज के शिष्य श्री राजेन्द्रजी म.सा.के शिष्य श्री विनय मुनिश्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री मोहनलालजी आराधना भवन, सादड़ी भवन की गली से आईडिया टॉवर के पास, पालीताना (भावनगर) गुज. में चल रहा है।

✻ पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जगतचंद्रसूरीजी महाराजा आदि ठाणा साधु-साध्वी भगवंत का चार्तुमास पालड़ी जैन नगर श्री संघ अहमदाबाद में हो रहा है।

✻ पूज्य आचार्य श्री हेमचंद्रसूरीजी म.सा.,आचार्य श्री कल्याणबोधिसूरीजी म.सा.आदि ठाणा-श्री लक्ष्मीवर्धक जैन संघ शांतिवन पालड़ी अहमदाबाद (गुज.)।

✻ पूज्य आचार्य श्री जगतचंद्र सूरीजी म.सा.आदि ठाणा श्री जैन श्वे. श्री संघ जैन नगर पालड़ी, अहमदाबाद (गुज.)।

✻ पूज्य आचार्य श्री जयसुन्दर सूरीजी म.सा.,आचार्य श्री महाबोधि सूरीजी म.सा.आदि ठाणा श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ नवकार जैन संघ वासणा, अहमदाबाद (गुज.)।

✻ पूज्य आचार्य श्री चन्द्रजीत सूरीजी म.सा.आदि ठाणा श्री जैन श्वेतांबर श्रीसंघ भीड़भजन जैन संघ गादावरी नगर, वासणा, अहमदाबाद (गुज.)।

✻ पूज्य आचार्य श्री हरीकांत सूरीजी म.सा. आदि ठाणा जैन श्वेतांबर श्री संघ चित्राकुट जैन संघ सोला रोड़, अहमदाबाद (गुज.)।

✻ पूज्य आचार्य श्री हंसकीर्ति सूरीजी म.सा.आदि ठाणा तपोवन संस्कारधाम, अमीयापुर अहमदाबाद (गुज.)।

✻ आचार्यश्री भव्यकीर्तिसूरीजी म.सा.आदि ठाणा श्री जैन श्वेतांबर श्रीसंघ अंकुट जैन संघ नारणापुर अहमदाबाद (गुज.)।

✻ पूज्य आचार्य श्री मुक्तिवल्लभ सूरीजी, आचार्य श्री मेघवल्लभसूरीजी आचार्य श्री उदयवल्लभसूरीजी म.सा. आदि ठाणा जैन श्वेतांबर मर्ति श्रीसंघ रामनगर जैन संघ, साबरमती, अहमदाबाद (गुज.)।

✻ पूज्य उपाध्याय श्री विमलसेन विजयजी, पंन्यास प्रवर श्री नंदीभूषण विजयजी म.सा. आदि ठाणा, श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ, जैन सोसायटी जैन संघ पालड़ी, अहमदाबाद (गुज.)।

✻ पूज्य प्रर्वतक श्री पद्मरत्न विजयजी म.सा.आदि ठाणा श्री जैन श्वेतांबर श्रीसंघ कंचन भूमि जैन संघ, सेटेलाईट, अहमदाबाद (गुज.)।

✻ पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री राजेन्द्रसूरीजी के शिष्य आचार्य श्री वरबोधिसूरीजी म.सा., पूज्य ज्योतिविद् उपाध्याय श्री विमल सेन विजयजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश 24 जून को श्री शेफाली श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ सी/2 शेफाली अपार्टमेंट लवानिया सोसायटी के पास जीवराज हॉस्पिटल,वासणा अहमदा-बाद-380007 (गुज.) में हुआ।

✻ पूज्य पंन्यास प्रवर श्री निपुणचंद्रविजयजी म.सा.आदि ठाणा श्री जैन श्वेतांबर श्रीसंघ, खानपुर जैन संघ, खानपुर, अहमदाबाद (गुज.)।

✻ पूज्य पंन्यास प्रवर हिटष्यबोधि विजयजी म.सा.आदि ठाणा श्री जैन श्वेतांबर श्रीसंघ, नरोड़ा गोडीजी पार्श्वनाथ, नारोड़ा, अहमदाबाद (गुज.)।

❋ पूज्य मुनिश्री रविकीर्ति विजयजी म.सा.आदि ठाणा श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ, अरिहंतनगर, मेमनगर, अहमदाबाद (गुज.)।

❋ पूज्य पंन्यास श्री अपराजित विजयजी म.सा.आदि ठाणा श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ, वीतरागनगर जैन संघ-अहमदाबाद (गुज.)।

❋ पूज्य पंन्यास सत्यसुन्दर विजयजी म.सा.आदि ठाणा श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ नवरंगपुरा जैन संघ नवरंगपुरा, अहमदाबाद (गुज.)।

❋ पूज्य पंन्यास श्री प्रशांतवल्लभ विजयजी म.सा. आदि ठाणा श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ शंखेश्वर पार्श्वनाथ श्री संघ नूतन उपाश्रय, साबरमती, अहमदाबाद (गुज.)।

❋ पूज्य पंन्यास कल्परक्षित विजयजी म.सा. आदि ठाणा श्री जैन श्वेतांबर संघ, आंम्बावाड़ी, अहमदाबाद (गुज.)।

❋ मुनिश्री हर्षबोधिविजयजी म.सा. श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ, शैकाली अपार्टमेंट श्री शेफाली श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघा सी/2 शेफाली अपार्टमेंट लवानिया सोसायटी के पास, जीवराज हॉस्पिटल, वासणा अहमदाबाद - 380007 (गुज.)

❋ पूज्य पंन्यास आदिजितशेखर विजयजी म.सा. श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ महावीर जैन संघ, ओपेरा, अहमदाबाद (गुज.)।

❋ पूज्य पंन्यास रत्नबोधि विजयजी म.सा. श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ सेटेलाईट जैन संघ, श्यामल चार रास्ता, सेटेलाईट, अहमदाबाद (गुज.)।

❋ पूज्य पंन्यास दिव्यदर्शन विजयजी म.सा., श्री जैन श्वेतांबर संघ, महासुखनगर जैन संघ कृष्णानगर, अहमदाबाद (गुज.)।

❋ पू. पंन्यास सत्यबोधिविजयजी म.सा. श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ, भगवान नगर का टेकरा, भगवान नगर, अहमदाबाद (गुज.)।

❋ पूज्य मुनिश्री अनंतयश विजयजी म.सा. श्री जैन श्वेतांबर संघ अरिहंत शांतिवर्धक जैन संघ, देवा वासणा, अहमदाबाद (गुज.)।

❋ पूज्य पंन्यास यशकल्याण विजयजी म.सा.आदि ठाणा-श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ शंखेश्वर पार्श्वनाथ संघ, मेमनगर, अहमदाबाद (गुज.)।

❋ पूज्य मुनिश्री भक्ति वर्धन विजयजी म.सा.आदि ठाणा-श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ, जैन मर्चेन्ट सोसायटी जैन संघ, पालड़ी, अहमदाबाद (गुज.)।

❋ पूज्य पंन्यास भव्य सुन्दर विजयजी म.सा.-श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ देवकीनंदन जैन संघ, देवकीनंदन नारायणपुरा, अहमदाबाद (गुज.)।

❋ पूज्य पंन्यास श्री सुधारस विजयजी म.सा.आदि ठाणा, श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ, शाहीबाग, गिरधर नगर जैन संघ, शाहीबाग, गिरधरनगर अहमदाबाद (गुज.)।

❋ पूज्य मुनि ज्ञान प्रेमविजयजी आदि ठाणा- श्री जैन श्वेतांबर संघ, प्रहलादनगर, अहमदाबाद (गुज.)।

❋ पूज्य मुनिश्री करुणा विजय दृष्टिविजयजी म.सा.-जैन श्वेतांबर श्री संघ, कृष्णनगर जैन संघ, कृष्णनगर अहमदाबाद (गुज.)।

❋ श्री आदिनाथ जैन श्वेतांबर श्री संघ धन ततवाड़, मुकाम धन ततवाड़ा बोड़ेली पोस्ट-वणी पादरी (छोटा नागपुर) (गुज.) में पूज्य आचार्य श्री ललितसेनसूरीजी म.सा., मुनिश्री जिनेन्द्रविजयजी म.सा.का चार्तुमास हो रहा है।

❋ साध्वी श्री अनंतगुणाश्रीजी म.सा. की सुशिष्य साध्वी श्री सुप्रसन्ना श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश राजकोट (गुज.) में 24 जून को हुआ।

म.प्र. के चार्तुमास

❋ पूज्य साध्वीवर्या मातृहृदया श्री अमितगुणाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या अमितगुणाश्रीजी की सुशिष्या साध्वीश्री अर्चपूणा श्रीजी, साध्वी श्री भक्तिपूर्णा श्रीजी म.सा. का चार्तुमास श्री धर्मरत्न पार्श्वनाथ साधना-स्थली जमुनिया-कला (नीमच) (म.प्र.) में हो रहा है।

❋ सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री मुक्तिरेखा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री चन्दाप्रभस्वामी जैन श्वेतांबर मंदिर, नयापुरा, उज्जैन (म.प्र.) में हो रहा है।

❋ पूज्य साध्वी श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा.की सुशिष्या साध्वीवर्या श्री अमिपूर्णाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री शांतिनाथ जिनमंदिर, शांतिनाथ की गली, उज्जैन (म.प्र.) में हो रहा है।

❋ सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री दमिताश्रीजी म.सा.आदि का चार्तुमास श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी, खाराकुआ, उज्जैन (म.प्र.) में हो रहा है।

राजस्थान के चार्तुमास

❋ पूज्यपाद आचार्य देवेश श्रीमद् जयानंदसूरीजी महाराजा का चार्तुमास श्री जैन श्वेतांबर श्रीसंघ, भीनमाल (राज.) में हो रहा है।

हमारे तीज-त्यौहार

1-आषाढ़ सुद-14	शनिवार	4-7-2020	चौमासी चवदस- चार्तुमास आरंभ
2-श्रावण वद-1	सोमवार	6-7-2020	श्री सीमंधर स्वामी आदि 20 विहारमान प्रभु का च्यवन कल्याणक
3-श्रावण वद-3	बुधवार	8-7-2020	डेढ़ महिने का घर
4-श्रावण वद-30	सोमवार	20-7-2020	पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा (श्री सागरानंदसूरीजी महाराजा) का 146 वां जन्म दिवस
5-श्रावण सुद-3	गुरुवार	23-7-2020	श्री सीमंधर स्वामी आदि 20 विहारमान प्रभु का निर्वाण कल्याणक
6-श्रावण सुद-4	शुक्रवार	25-7-2020	श्री नेमिनाथ प्रभु का जन्मकल्याणक, मासक्षमण आरंभ दिन
7-श्रावण सुद-5	शनिवार	26-7-2020	श्री नेमिनाथ प्रभु का दीक्षा कल्याणक

पंचक :–

आरम्भः–श्रावण वद-3, बुधवार, दिनांक 8/7/2020, समय- 12.13 बजे

समाप्तः– श्रावण वद-8,सोमवार, दिनांक 13/7/2020, समय- 11.15 बजे

पुष्प नक्षत्र :–

आरम्भः–श्रावण वद-30, सोमवार, दिनांक 20/7/2020, समय-21.21 बजे

समाप्तः– श्रावण सुद-1, मंगलवार, दिनांक 21/7/2020, समय-20.31 बजे

आगामी अंक - अगस्त 2020
"महापर्व पर्युषण"
विशेषांक रहेगा।
आपकी रचना भेजिये

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

सादर आमंत्रण

✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

अनंत सिद्धो की सिद्ध भुमि युगादिदेव **श्री आदिनाथ प्रभु** की

पावन पवित्र भूमि **शंत्रुजय पालिताणा महातीर्थ** में

...कर्म भंजन आत्म रंजन...

पावन आशिष

जन जन की आस्था एवं श्रद्धा के केन्द्र मालव भूषण तप सम्राट महान जैनाचार्य परम पूज्य

आचार्य देव **श्री नवरत्नसागर सूरीश्वर जी महाराजा**

शुभा आशिष

शासनवीर गच्छाधिपति परम पूज्य आचार्य देव

श्री दौलतसागर सूरीश्वर जी महाराजा

पावन निश्रा

गुरु नवरत्न कृपा प्राप्त युवा हृदय सम्राट जिनशासन

हित चिंतक जैन आगम शास्त्रों के ज्ञाता सूरीमंत्र आराधक

महामांगलिक प्रदाता परम पूज्य आचार्य देव

श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वर जी महाराजा

आदि ठाणा 9

-: चातुर्मास स्थल :-

श्री जंबुद्विप वर्धमान तीर्थ पेढी पालीताणा (गुजरात)

निवेदक

समस्त पालीताणा जैन श्री संघ

जैन श्वेताम्बर मालवा महासंघ एवं नवरत्न परिवार

संपर्क सुत्र :-9425736000, 8878146000, 7000638788

वर्ष-25 आषाढ़-श्रावण जुलाई 2020 अंक-7

आर.एन.आई. नं. 0048670/29/30/982

पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन. नं. एम.जी. 08/2018-2020

प्रति,

डॉ. सुभाष जैन (सम्पादक)

आगमोद्धारक

46, सखीपुरा, उज्जैन - 456 001 (म.प्र.)

फोन : 0734 - 2558353, मोबा. 09425

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

प्रति,
श्रीमान्

बुक-पोस्ट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स

285, एम.जी. रोड, इंदौर से मुद्रित। फोन : 0734 - 2412232, संपादक मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897